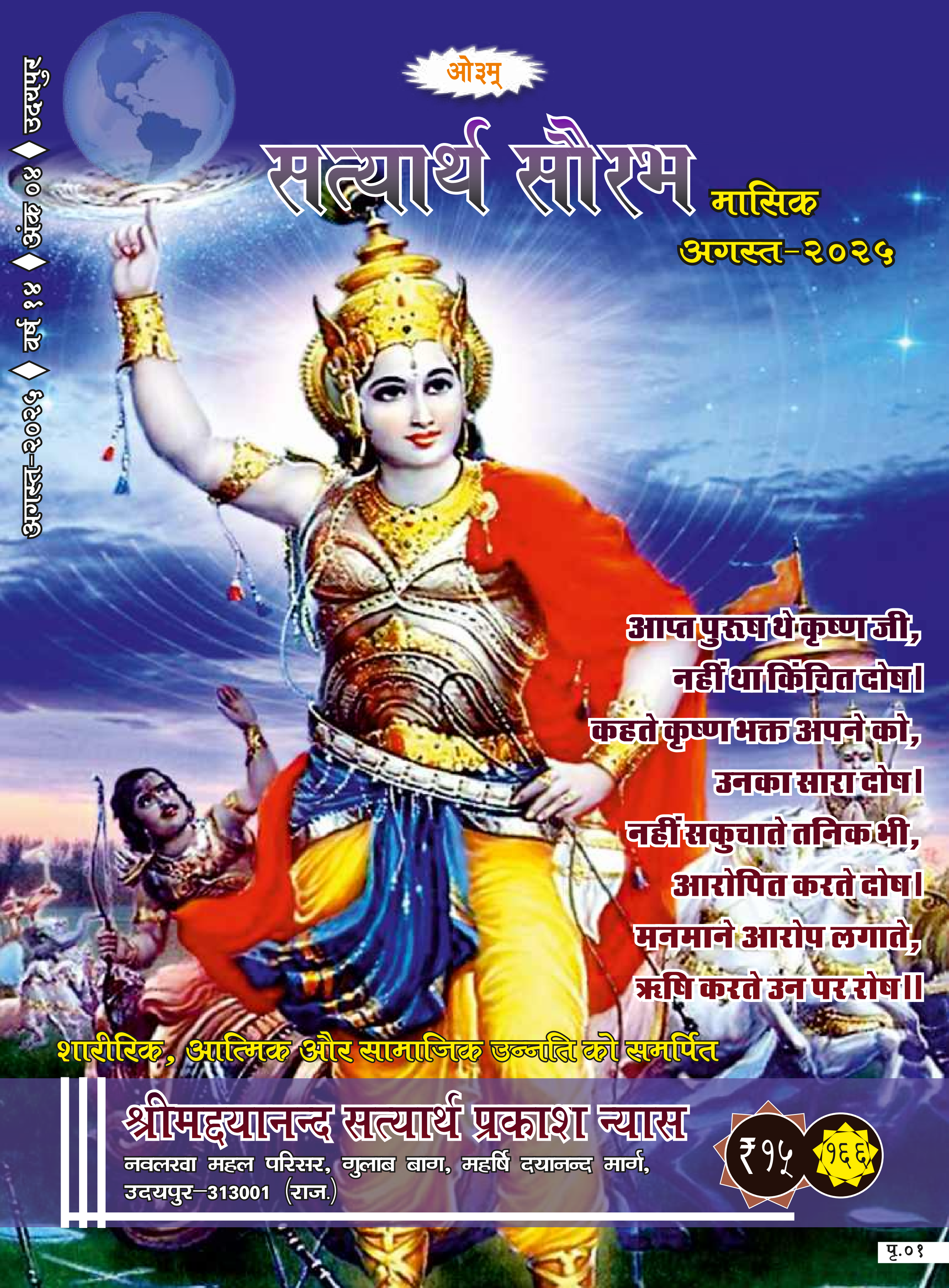

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त-२०२५

अगस्त-२०२५ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

आप्त पुरुष थे कृष्ण जी,
नहीं था किंचित दोष।
कहते कृष्ण भक्त अपने को,
उनका सारा दोष।
नहीं सकुचाते तनिक भी,
आरोपित करते दोष।
मनमाने आरोप लगाते,
ऋषि करते उन पर रोष।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १६६

सफलता के 6 मूल मंत्र
मीठा बोलना
कृपा परम-पिता परमात्मा की
आशीर्वाद माता-पिता का
प्यार संसार का।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
GARAM MASALA
गरम मसाला
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
PEACOCK
KASOORI METHI
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
श्रावण शुक्ल त्र्योदशी
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

August - 2025

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०६

कर्म है कसौटी, जन्म नहीं

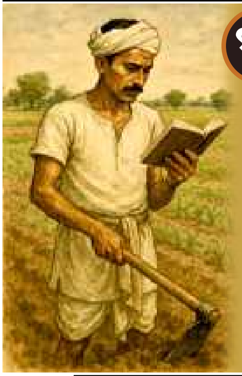

१६

थोड़ी नादानी दे मौला

	०४	वेद सुधा
	१२	यज्ञ क्या है?
	१४	अमर शहीद-शिवराम हरी राजगुरु
	१९	समझें तो आर्य समाज है क्या?
समाचार	२१	
	२३	परमात्मा की अद्भुत सृष्टि
	२५	थाइराइड ग्रन्थी विकार एवं चिकित्सा
	२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
	२८	सत्यार्थ मित्र बनें
हलचल	३०	

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक -०४

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

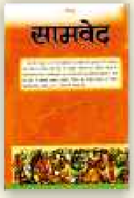

वेद सुधा

प्रभु के अभिलाषी भोगों में नहीं फँसते

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः।। - सा. उ. ८/२/६/२

इमे हे ते- ये ही वे, **ब्रह्मकृतः**- स्तुति करनेवाले हैं, **सचा**- [जो] मिलकर, एकसाथ, **सुते**- [परमेश्वर के] रचे, **मधौ**- मधुर आनन्द पर, **मक्षः न**- मक्खियों के समान, **आसते**- बैठते हैं, **वसूयवः**- [ऐसे] **वसु**- आत्मा को चाहने वाले, **जरितारः**- स्तोता लोग, **रथे पादम् न**- रथ में चरण के समान, **इन्द्रे कामम्**- परमेश्वर में इच्छा को, **आदुधः**- रखते हैं। **वसूयवः**- आत्मधनाभिलाषी, **जरितारः**- स्तोता भक्त, **कामम्**- पूरी तरह, **इन्द्रे**- परमेश्वर में, **पादम् आदधुः**- ठिकाना लगाते हैं। **रथे न**- [किन्तु] रमणसाधन में नहीं।

व्याख्या

प्रभु के भक्त की पहचान है कि वह उठता-बैठता, चलता-फिरता भी अपने प्रभु में रमता रहता है। संसार के कार्य करता हुआ भी वह कभी परमात्मा से विमुख नहीं होता। उसने अनुभव कर लिया है कि मेरा प्रियतम-

सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु। - यजुः ३२/८

सर्वव्यापक है और सृष्टि में ओत-प्रोत है।

और कि वह-

रसेन तृप्तः। [अथर्व. १०/८/४४] आनन्द से तृप्त है।

अतः वह समझता है कि समस्त संसार में जो रस है, वह तो उसी रसमय का है, अतः वह सांसारिक पदार्थों से आनन्द के कण-कण की भिक्षा न करके उस आनन्दधन के पास जाता है। वहाँ धरणा लगा देता है-

मधौ न मक्ष आसते।

जैसे मधु पर मक्खियाँ जा बैठती हैं।

मधुमक्षिकाएँ मधु की तलाश में निकलती हैं, मधु मिलने पर वहाँ डेरा डाल देती हैं। संसार से सन्तप्त जीव आनन्द की तलाश में निकलते हैं, ज्यों ही उन्हें आनन्दधन प्रभु का मेल होता है, वे भी मक्खियों की भाँति वहाँ आसन जमा लेते हैं। अब वे अपनी सारी कामनाओं का विषय परमेश्वर को बना लेते हैं, क्योंकि अब उन्होंने आनन्द की मीमांसा कर ली है-

सैषाऽऽनन्दस्य मीमांसा भवति। युवा स्यात्साधुयुवाध्यापकः। आशिष्ठो द्रिढिष्ठो बलिष्ठः।
तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्। स एको मानुष आनन्दः। ते ये शतं मानुषा आनन्दाः।
स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।। - तैतिरीयो. ब्रह्मानन्द. ८

आनन्द की मीमांसा इतनी ही है कि जवान हो, सदा भली प्रकार जवानी के विचार रखता हो, उत्तम भोजन करता हो, अत्यन्त दृढ़ हो और बलिष्ठ हो। यह सम्पूर्ण धन-धान्य से पूर्ण पृथिवी उसकी हो, यह एक मानुष आनन्द है [आनन्द की एक ईकाई Unit है], ऐसे सौ मानुष आनन्द हों, तो निष्काम ब्रह्मज्ञानी का आनन्द है।

और ब्रह्मानन्द! उसे कैसे गिनाएँ? जिसने उसे पा लिया, वह क्योंकर सांसारिक विषयों में फँसेगा? कहा है-

यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्। तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम्।। - यो. द. २/४२ व्यासभाष्य

संसार में जो कामसुख हैं अथवा जो कोई महान् दिव्य सुख हैं, वे तृष्णा-नाश से उत्पन्न होने वाले आनन्द का सोलहवाँ भाग भी नहीं हैं। इसलिए ऐसे महात्मा-

इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवः।

'आत्मधनाभिलाषी स्तोता परमात्मा में कामना को लगाते हैं।'

वसु= धन की कामना है न? प्रभु इन्द्र हैं,अखिलैश्वर्य-सम्पन्न हैं, वसुओं के वसु हैं, अतः आत्मधनाभिलाषी उस धनियों के धनी की कामना करते हैं। जिन्होंने भगवान् की चाहना की, वे विषयों से हट जाते हैं-

रथे न पादमादधुः।

रमणसाधन में= मौज-बहार के उपायों में वे पैर नहीं रखते।

विषय-सुख क्षणिक और दुःख-परिणामी है और भगवदानन्द शाश्वत। शाश्वत के होते क्षणिक को कौन ले? नचिकेता के तृतीय प्रश्न के समाधान के प्रसंग में यम कहते हैं-

जानाम्यहं शेवधिरित्यनित्यं नह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत्।
ततो मया नचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम्।। - कठ. २/१०

मैं जानता हूँ कि संसार के सुखसाधन, द्रव्य-दारा सब अनित्य हैं, क्षणिक हैं और कि इन अनित्य पदार्थों के द्वारा वह ध्रुव शाश्वत आनन्द नहीं मिल सकता, अतः मैंने अपने हृदय में नाचिकेत अग्नि ख्संशयरहित प्रभुप्रीति, जलाई है और इस प्रकार उस नाचिकेत अग्नि में इन अनित्य द्रव्यों का होम करने से नित्य= शाश्वत को मैंने पा लिया है।

प्रभुभक्त अनित्य में फँस ही नहीं सकता। वेद ने भी उपदेश दिया है-

ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभि सोमं मृशामसि। - ऋ. १०/१७३/६

'हम ध्रुव हवि के द्वारा ध्रुव सोम को प्राप्त होते हैं।'

उपनिषद् ने जो बात कहीं, वेद उससे एक पग आगे की बात कह रहा है। अनित्य द्रव्यों का त्याग तो अनिवार्य है, किन्तु नित्य पदार्थ- अपने आत्मा को भी हविः (हवन-सामग्री) बनाना होगा। आत्मा की बलि देनी होगी, अर्थात् अहंकार को मारना होगा। अहंकार को मारे बिना प्रभु-मिलन असम्भव है।

प्राणी अज्ञान के वशीभूत हुआ भौतिक भोगों में फँसता है। जब आत्मबलिदान की भव्य भावना उत्पन्न हो गई, तब आत्मा की भोगरुचि तो विलीन हो ही जाती है, अतः वेद कहता है- **रथे न पदमादधुः।**

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

❑❑❑

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

कर्म है कसौटी, जन्म नहीं

महर्षि दयानन्द ने भारत से कुरीतियों को समूल नष्ट करने के प्रयास में सबसे बड़ा शंखनाद जिस कुप्रथा के विरुद्ध किया था वह थी जन्मगत जाति प्रथा। मानव-मानव में द्वेष और विषमता की खाई पैदा करने और अपने ही समाज को त्याग धर्मान्तरण करने में यह सबसे बड़ी साधक बनके खड़ी थी।

गहराई से चिन्तन किया जाए तो मनुष्यों में कोई जाति नहीं होती, मनुष्य स्वयं एक जाति है। सभी मनुष्य समान हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता उसके गुणों से होती है न कि जन्म से। मिथ्या अहंकारवश जो मनुष्य मानव निर्मित कुल, वंश, गोत्र या जाति के आधार पर अपने को उच्च और दूसरे को निम्न समझता है वह उसकी अज्ञानता और विकृत मानसिकता का परिचायक है ।

ऋषि दयानन्द ने यह स्पष्ट किया था कि मनुष्य अपने आप में स्वयं जाति है उसके पुनः विभाग जाति के रूप में हो ही नहीं सकते। **'आकृतिके जातेः लिंगाख्या'** आकृति के आधार पर जाति की पहचान होती है। **'समान प्रसवात्मिका जातिः'** समान प्रसव से जाति पहचानी जाती है। इस प्रकार मनुष्य-जाति एक है, यह ईश्वर कृत है।

अब हम वर्ण की बात करें तो- **'वर्णो वृणोतेः'** सूत्र की व्याख्या करते हुए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-

वर्णो वृणोतेरिति निरुक्तप्रमाण्याद्वरणीया वरीतुमर्हाः।
गुणकर्माणि च दृष्ट्वा यथायोग्यं वियन्ते ये ते वर्णाः॥ (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका -वर्णाश्रमधर्मविषय)

अर्थात्- जिसके जैसे गुणकर्म हों, उसे वैसा ही कार्य देना 'वर्ण' है। अतः जब कोई मनुष्य अपने गुण, कर्म, रुचि व योग्यतानुसार शिक्षा प्राप्त करता है तथा तदनुसार जीविका चुनता है या वरण करता है, वह उसका 'वर्ण' कहलाता है और इस वर्ण का उसके माता-पिता के वर्ण के साथ सम्बन्ध होना अनिवार्य नहीं है। मनुष्य अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार कोई भी वर्ण चुन सकता है तथा योग्यतानुसार बदल भी सकता है।

गुण-कर्म और योग्यता के अनुसार वर्ण आवश्यक होते हैं। वर्ण का जाति से अर्थात् जन्मगत जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई बच्चा किसी भी कुल में पैदा हो सकता है परन्तु गुरुकुल में योग्यता अर्जित करने के पश्चात् वह तदनुरूप वर्ण में प्रवेश करेगा यह सुनिश्चित है। वेद के अनुसार चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। इनके कर्म निर्धारित हैं। यह विभाग समाज में किया जाता है जो केवल और केवल स्वभाव, योग्यता और कर्म के आधार

पर है। यह गत्यात्मक व्यवस्था है अर्थात् वर्ण परिवर्तन सम्भव है।

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने इस सम्बन्ध में क्या कुछ लिखा है अति संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

वर्णव्यवस्था गुण कर्म के आधीन होनी चाहिए।

प्रश्न- क्या जिसके माता-पिता ब्राह्मण हों, वह ब्राह्मणी-ब्राह्मण होता है और जिसके माता-पिता अन्यवर्णस्थ हों, वह कभी ब्राह्मण हो सकता है?

उत्तर- हाँ, बहुत से हो गये, होते हैं और होंगे भी। जैसे छान्दोग्य उपनिषद् में जाबाल ऋषि अज्ञातकुल, महाभारत में विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण और मातंग ऋषि चाण्डाल कुल से ब्राह्मण हो गये थे। अब भी जो उत्तम विद्या स्वभाववाला है, वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है, और वैसा ही आगे भी होगा।

महर्षि ने जो अकाट्य तर्क दिया उस पर विचार करें। वे लिखते हैं-

जो कोई रज-वीर्य्य के योग से वर्णाश्रम माने और गुणकर्मों के योग से न माने, तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच, अन्त्यज अथवा कृश्चीन, मुसलमान हो गया हो, उसको ब्राह्मण क्यों नहीं गिनते? यहाँ यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म छोड़ दिये, इसलिए वह ब्राह्मण नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता है जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हैं, वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म स्वभाववाला होवे, तो उसको भी उत्तम वर्ण में और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिए।

हम समझते हैं इसका उत्तर किसी के पास नहीं हो सकता।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।। - मनु. १०/६५

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के सदृश गुण-कर्म-स्वभाव वाला हो, तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाय। वैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के कुल में उत्पन्न हुये शूद्र के सदृश हों, तो शूद्र हो जावें। वैसे ही क्षत्रिय, वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण वा शूद्र के समान होने से, ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाते हैं। अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष वा स्त्री हो, वह-वह उसी वर्ण में गिनी जावे। इसको हम आसानी के लिए यूँ समझ सकते हैं- एक व्यक्ति अनेक सेवाओं की परीक्षा देता है परन्तु असफल रहता है। अंततः किसी विभाग में चपरासी की नौकरी करता है। परन्तु वह पुरुषार्थ का त्याग नहीं करता और पढ़ाई करने में लगा रहता है। स्नातकोत्तर करता है नेट परीक्षा उत्तीर्ण करता है और विश्वविद्यालय में प्रवक्ता बन जाता है। लीजिये वह बन गया शूद्र से ब्राह्मण। कोई उसे प्रवक्ता बनने से यह कहकर रोक सकता है नहीं तुम तो चपरासी हो? नहीं। जैसे इसे नहीं रोका जा सकता उसी प्रकार योग्यता अर्जन करने पर किसी भी शूद्र अथवा अन्य वर्णस्थ को ब्राह्मण बनने से नहीं रोका जा सकता।

हम आपको एक सत्य घटना से अवगत कराते हैं जहाँ खेत की मिट्टी में परिश्रम करने वाले सुरेश कुमार ने अंततः कलेक्टर पद को सुशोभित किया।

सुरेश कुमार का जन्म २७ सितम्बर १९६६ को हरियाणा के एक छोटे से गाँव में हुआ। उनका बचपन खेतों की मेड़ों, हल और बैलों के बीच बीता। उनके पिता एक साधारण किसान थे और माँ एक गृहिणी, जिन्होंने अकसर दो जून की रोटी के लिए कठिन श्रम किया। इस पृष्ठभूमि में पढ़ाई करना कोई आसान कार्य नहीं था- लेकिन सुरेश के भीतर कुछ विशेष था: सपने देखने की हिम्मत।

वे स्कूल से लौटने के बाद खेत में काम करते, और रात को लालटेन की रोशनी में पढ़ते। दोस्तों से किताबें

उधार लेकर, ट्यूशन पढ़ाकर और कभी-कभी दिन में खेतों में मजदूरी कर अपनी पढ़ाई का खर्चा निकालना उनकी आदत बन गई थी।

२०१२ में उन्होंने नौकरी छोड़ दी और UPSC की तैयारी में जुट गए। कई बार असफलताएँ मिलीं, लेकिन दृढ़ विश्वास नहीं डिगा। और फिर आया वह स्वर्णिम वर्ष-२०१४।

सुरेश कुमार ने UPSC २०१४ परीक्षा में ४१वीं रैंक हासिल की। यह एक ऐतिहासिक क्षण था- एक किसान का बेटा अब भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) में शामिल हो चुका था। खेत की मिट्टी से उठा यह नौजवान आज देश की नीतियों को आकार दे रहा है।

वर्ण परिवर्तन का आधार भी यही पुरुषार्थ और उससे अर्जित योग्यता है। अतः ईश्वर के लिए वर्ण और जाति को पर्याय मत समझिये।

भारतीय मनीषा 'वर्ण' के बारे में क्या सोचती है और जन्मगत जाति के बारे में उसके क्या विचार हैं यह स्पष्ट है। योग्यता और केवल योग्यता यही वर्ण का आधार है। प्राकृतिक न्याय भी यही कहता है, वेद भी यही कहता है और सभी शास्त्र भी यही कहते हैं।

आर्य समाज ने अपने प्रारम्भ के साथ महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत शिक्षा पद्धति को अपनाते हुए जन्मगत जाति को दूर कर वर्ण व्यवस्था को स्थापित करने का प्रायोगिक रूप से भी अत्यन्त सुन्दर और महत्वपूर्ण कार्य किया परन्तु आज वही आर्य समाज इस दिशा में क्या कर रहा है? यह प्रश्न पूछा जा रहा है। यह कोई छोटा विषय नहीं है और जिस विषय को आपके आचार्य ने सबसे ज्यादा प्रभावी ढंग से सुलझाने का काम किया, आज हम लोग ही पूर्ण उपेक्षा भाव रखे हुए ऐसे चुप हैं कि कहना पड़ता है 'कृपया शोर मत कीजिए आर्य समाज सो रहा है।' ऐसा क्यों कहना पड़ रहा है? बीते वर्षों की बात छोड़ भी दें तो गत तीन-चार वर्षों में राजनीति की गोटियों को खेलते हुए जातिगत जनगणना पर अत्यधिक जोर दिया जाने लगा। जैसे-तैसे समरसता का भाव बढ़ रहा था, पर ये राजनीतिक पुनः उसे खण्ड-खण्ड करने के लिए जीजान से लगे हैं। जाति आधारित जनगणना ऐसा ही प्रयास है। परन्तु क्या आर्य समाज ने इस विषय में कुछ किया? आज टेलीविजन चैनलों में, समाचार पत्रों में जब किसी घटना को लेकर के जाति और वर्ण के सम्बन्ध में विचार-विमर्श होता है आपने हमारे किसी विद्वान् को उन चैनलों पर आमंत्रित किए जाते हुए देखा है? ऐसा क्यों है? विचार कीजिए। अब जाति जनगणना की जा रही है। अगर आप इस जघन्य जन्मजाति प्रथा को मनुष्य समाज से दूर करना चाहते हैं तो इसको पूर्णतः अप्रासंगिक बनाना होगा। अतएव क्या आर्यसमाज को जनजागरण के लिए प्रबल आन्दोलन नहीं छेड़ देना चाहिए था? मुझे नहीं लगता कि आर्य समाज के किसी मंच पर इस प्रकार की कोई चर्चा हो करके बौद्धिक विमर्श मात्र भी हुआ हो। और तो और अभी आर्य समाज के डेढ़ सौ वें वर्ष का उत्सव मनाया गया। सारे मूल विषय जो समाज को उसका उज्ज्वल चरित्र प्रदान करते हैं मंच से गायब थे।

क्या आश्चर्य का विषय नहीं है कि भारत के कुछ संस्थानों में जैसे कि जेल, उसमें आज भी जन्मगत जाति के आधार पर कार्य करने को दिए जाते हैं। जैसे कोई धोबी जाति का कैदी है उसे कपड़े धोने के कार्य में लगाया

जाता है। कोई नाई जाति का कैदी है उसको बाल काटने का कार्य दिया जाता है चाहे उसकी योग्यता कितनी भी हो, वह स्नातकोत्तर ही क्यों ना हो?

भारत के सुप्रीम कोर्ट ने २०२४ में जेल में पनप रही इस जात्याधारित व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया।

तीन-न्यायाधीशों की एक पीठ (CJI D.Y. Chandrachud, J. J. B. Pardiwala, J. Manoj Misra) ने अक्टूबर २०२४ में यह निर्णय सुनाया। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट रूप से कहा-

जेलों में किसान जाति, ब्राह्मण आदि को खाना बनाने, और दलित/छोटे जाति के कैदियों को सफाई जैसी कार्यवाही करने का निर्देश असंवैधानिक हैं।

इसका आधार संविधान के अनुच्छेद १४, १५, १७, २१, और २३ हैं- जो क्रमशः समानता, भेदभाव निषेध, अस्पृश्यता निषेध, जीवन और गरिमा का अधिकार, और जबरदस्ती श्रम निषेध से सम्बन्धित हैं।

कोर्ट ने निर्देश दिए-

जेल नियमों से जाति विवरण हटाएँ, और किसी भी कैदी को जाति आधारित कार्य थोपना बन्द करें, और तीन महीने में सभी राज्यों द्वारा संशोधन कर जानकारी रिपोर्ट प्रस्तुत करें। इस अभूतपूर्व निर्णय के लिए सुप्रीम कोर्ट धन्यवाद की पात्र है। बस मन में यही प्रश्न है कि क्या यही आदेश सम्पूर्ण समाज पर लागू नहीं हो सकता?

वस्तुतः जन्मगत जाति व्यवस्था आरक्षण की सुविधाओं और राजनीतिक लाभ के कारण भी जिन्दा है, जिन्हें आरक्षण का लाभ मिल रहा है वे इसे बनाए रखना चाहते हैं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय अपने वर्णानुकूल कार्य करते हुए भी जेब में अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा, महा पिछड़ा आदि का प्रमाणपत्र रखना चाहते हैं, और वोट की खातिर समय-समय पर राजनीतिक दल इसमें प्राणवायु फूँकते रहते हैं। इसके कायम रहते हुए, इसके आधार पर विशेष सुविधाएँ लेते हुए, आप इसे दूर नहीं कर सकते। क्या आश्चर्य है कि एक ही परिवार के अनेक सदस्य उच्च पदस्थ हैं पर फिर भी उनकी सन्तान दलित है। सुविधाभोगी इस पर कोई अंकुश नहीं चाहते।

ऐसी प्रवृत्ति वाले लोगों की आँख खोलने हेतु अभी माननीय उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बी. गवई ने एक बड़ा सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा मैं दलित था मेरे पिता ने वास्तव में वह सब झेला जो एक दलित झेलता है परन्तु आज जब मैं इस पद पर पहुँच गया हूँ तो मैं दलित नहीं हूँ, मेरा बेटा अब दलित नहीं होना चाहिए। साधु! साधु!

जीवन में एक स्तर पर पहुँचकर उन्होंने कहा 'मैं दलित हुआ करता था, लेकिन आज मैं चीफ जस्टिस हूँ- मेरे बेटे को दलित मानकर सुविधा मिले' इस दृष्टिकोण को उन्होंने खुद 'अनुचित' बताया है। आरक्षण का उद्देश्य यह केवल पिछड़ापन मिटाने के लिए है; एक बार जब व्यक्ति शिखर तक पहुँच जाए, तो उसे आरक्षण की जरूरत नहीं ।

यही प्रशस्त मार्ग है। एक बार आरक्षण आदि सुविधाओं के चलते हुए जब कोई परिवार उच्च सामाजिक और आर्थिक स्तर प्राप्त कर लेता है तो फिर उसकी सन्तानों को इससे बाहर होना चाहिए। परन्तु वोट बैंक के भूखे

भेड़िए ऐसा होने देंगे? कदापि नहीं।

वस्तुतः यह एक सामाजिक समस्या है (जो अब पूर्णतः राजनीतिक बन गयी है)। इस सिलसिले में आर्य समाज को एक प्रबल आन्दोलन फिर से छेड़ना चाहिए था कि जन्मगत जाति प्रथा कृत्रिम है, अवास्तविक है और समाज के लिए हानिकारक है। हमारे आचार्य ने वेद के आधार पर इसको अच्छी तरह से स्थापित किया था परन्तु हम....। खैर।

इस भूमिका के साथ अभी उत्तर प्रदेश में कथावाचक की पिटाई के रूप में जो अवांछित और निन्दनीय काण्ड हुआ है उस सन्दर्भ में लिखेंगे जिसने एक बार फिर वर्णव्यवस्था और जन्मजाति के मध्य अन्तर के प्रश्न को उपस्थित कर दिया है।

मुकुटमणि यादव और उनके साथी सन्त सिंह यादव दोनों कथावाचक हैं, जो भागवत कथा करने के लिए इटावा के दादरपुर गाँव (बकेवर थाना क्षेत्र) पहुँचे थे। मुकुटमणि यादव का जन्म और परिवार जवाहरपुरवा, इटावा में है। वे आठ भाइयों में सबसे बड़े हैं। उनकी माँ जन्म से गूंगी है, और परिवार के अनुसार, मुकुटमणि अकसर गाँव से बाहर, कथावाचन और धार्मिक यात्राओं पर रहते थे। प्रतीत यह होता है कि परिवार में अर्थार्जन का दायित्व भी मुकुटमणि के ऊपर ही है। वे दशकों से कथा प्रचार-प्रसार में ही जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर इटावा में क्या हुआ?

कथा के बाद यह अफवाह फैली कि ये दोनों कथावाचक ब्राह्मण नहीं, बल्कि यादव जाति से हैं। इस आधार पर

ग्रामीणों ने कथावाचकों को धोखाधड़ी का दोषी ठहराया और उन्हें पीटा गया। उनके बाल काट दिए गए, मुँह काला किया गया, और एक महिला के पैरों पर नाक रगड़ने के लिए मजबूर किया गया। यह पूरी घटना वीडियो में कैद हुई, जो सोशल मीडिया पर वायरल हुई। इसके विरोध में जिस तिवारी परिवार ने भागवत का आयोजन किया उसने घर की महिलाओं के साथ कथावाचकों के द्वारा छेड़छाड़ का आरोप लगाया। यह एक काउंटर एफ. आई. आर. है। सत्य क्या है यह जाँच के बाद सामने आएगा। और यदि यह कथा वाचक दोषी हैं, जाँच होकर अगर यह सत्य पाया जाता है तो इन्हें कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

प्रश्न यह है कि क्या जिस व्यक्ति की जन्मगत जाति यादव है और वह किसी कथा का विशेषज्ञ बनकर दशकों से सफलतापूर्वक कथा कर रहा है तो क्या उसको अधिकार नहीं है कि भागवत कथा कर सके? (ध्यातव्य- हम भागवत-कथा के समर्थक नहीं हैं) जैसा हमने ऊपर लिखा योग्यता ही कर्म का आधार है वर्ण का आधार है अगर मुकुटमणि भागवत कथा करने में निष्णात हैं तो फिर यह प्रश्न बेमानी है कि उनकी जन्मगत जाति क्या है।

भारत, जो वेदों और उपनिषदों की भूमि है, जहाँ ज्ञान को 'श्रद्धा और अभ्यास' से प्राप्त माना गया है, आज वहाँ यह विचार पनप रहा है कि कोई 'अवर्ण' व्यक्ति कथा नहीं कह सकता', 'यादव कथा नहीं कर सकता', 'दलित ब्राह्मणों की भूमिका नहीं निभा सकता'- यह सोच मानवता, धर्म और संविधान तीनों के विरुद्ध है।

मुकुटमणि यादव ने किसी से बलात् कथा का अवसर नहीं छीना। वे आमंत्रित होकर आए थे। उन्होंने किसी की आस्था को चोट नहीं पहुँचाई। लेकिन उनके साथ जो व्यवहार हुआ, वह देश के सामाजिक ताने-बाने की दरारों

को उजागर करता है। हाँ! यहाँ यह भी कह दें कि अगर मुकुटमणि ने अपने बारे में, अपनी जाति के बारे में कोई झूठ बोला है या भ्रमित किया है तो वह नितान्त अनुचित है। बताया जा रहा है कि उनके पास दो आधार कार्ड थे एक पर मुकुटमणि यादव और दूसरे पर मुकुटमणि अग्निहोत्री लिखा हुआ है। उन्हें इस फ्रॉड की आवश्यकता ही क्या है? आप किसी भी कुल में पैदा हुए हो अगर आप में जो कार्य आप कर रहे हैं उसे करने की योग्यता है तो फिर डंके की चोट पर उसको करिए और अपने बारे में कुछ भी मत छुपाइए। अगर आपकी कथा में लोगों की रुचि होगी तो कोई आपको रोक नहीं सकेगा और सत्य बताने के कारण आप दोषी भी नहीं होंगे।

पर अब यह मामला इस सबसे ऊपर चला गया है। राजनीति में वोट बैंक के भूखे शेरों ने इसे जकड़ लिया है। इस लड़ाई ने यादव बनाम ब्राह्मण की शक्ल ले ली है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने उन कथावाचकों का सम्मान किया। आज इस समय लिखते हुए हम यह नहीं कह सकते इस मामले में आगे न्याय किस प्रकार होगा परन्तु यह मामला पुनः समाज शास्त्रियों की आँखें खोल देने के लिए है कि वे समाज में स्थापित करें कि जन्म जाति और वर्ण में अन्तर है। जन्मगत जाति की समाप्ति होनी चाहिए। वर्ण व्यवस्था स्थापित होनी चाहिए और इसके लिए आर्य समाज जैसे संगठनों को अत्यन्त जागरूक हो करके विशेष प्रयत्न करने चाहिए।

जाति बन गयी है अब राजनीतिक हथियार।
नष्ट कर रहें समता समाज की नेता बारम्बार।।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें। -सम्पादक

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री के. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर

यज्ञ क्या है

मनुष्य अपने जीवन में कभी-कभी जीवन के लिए महत्वपूर्ण बातों से दूर रह जाता है, या उन्हें बहुत अधिक महत्व नहीं दे पाता है। इस कारण वह बहुत बड़े लाभ से वंचित रह जाता है। इसके दो कारण हो सकते हैं, पहला है ज्ञान का अभाव, दूसरा है आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता। अपने को सनातनधर्मी कहने वालों की प्रायः यज्ञ के सम्बन्ध में ये दोनों ही स्थिति हैं। कुछ तो यज्ञ के महत्व को उसके लाभों को समझे ही नहीं इसलिए उससे जुड़ नहीं पाए, दूसरे वे हैं जिन्होंने यज्ञ के स्थान पर किसी छोटी सी विधि को समझकर अपना लिया, इसलिये यज्ञ की आवश्यकता नहीं रही। यज्ञ में अग्नि प्रज्ज्वलित करके सुगन्धित सामग्री छोड़ी जाती है, किन्तु अब यज्ञ के स्थान पर दीपक, मोमबत्ती, अगरबत्ती, लोवान से काम चलाने

लगे। इतना ही नहीं पहले घी का दिया जलाते थे फिर तेल का हो गया, फिर मोमबत्ती आ गई और अब तो इलेक्ट्रॉनिक दिया और अगरबत्ती आ गई। बिजली का स्विच ऑन किया कि दोनों जलने लगेगें। न रूई की बाती की आवश्यकता, न तेल की, न दिए की। यह सब यज्ञ के स्थान पर हो रहा है जिसको हम मात्र औपचारिकता ही कह सकते हैं। सनातन धर्म में यज्ञ को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया है, याज्ञिक जीवन को ही श्रेष्ठ, सुख, शान्ति, समृद्धि, यश, कीर्ति का आधार माना है। इसलिए यज्ञ के महत्व को समझकर उसे जीवन का अवश्य पालनीय कर्तव्य मानना मानव मात्र के कल्याण का मार्ग है।

आइए, यज्ञ के सम्बन्ध में, सनातन धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों, विद्वानों एवं ईश्वरीय ज्ञान वेद में जो बताया है, वह कुछ अंशों में बताने का प्रयास यहाँ किया जा रहा है।

संसार में अनेक कर्म श्रेष्ठ कर्मों की श्रेणी में आते हैं। स्वयं के लिए किए गये कर्म स्वार्थ, परिवार के लिए किए गए पुरुषार्थ और इन दोनों कर्मों से पृथक् एक श्रेणी और है जो इन दोनों से श्रेष्ठ है, वह परमार्थ है। जैसा कि इसके सम्बोधन से ही स्पष्ट होता है, परम+अर्थ, जिसका अर्थ परम हो वह परमार्थ कहलाता है। परमार्थ का महत्व इसलिये भी अधिक है क्योंकि अपने व अपने परिवार के लिए कितने भी महान् कार्य किसी ने किये हों, उसे दुनिया कुछ दिनों में भुला देती है। उससे प्राप्त सुख भी अस्थाई है। किन्तु परमार्थ करने वाले को जमाना सदियों तक याद

रखता है और परमार्थ का सुख कभी समाप्त नहीं होता, वह स्थाई है।

परमार्थ वह है जो कार्य अपने स्वयं के या परिवार के हितों को छोड़ दूसरों के हितों के लिए विशेष ध्यान धरके किया जाता है। जो मात्र स्वयं या परिवार के लाभ को ध्यान में रखकर नहीं किए जाते केवल दूसरों को लाभ पहुँचाने की प्रमुख भावना से किए जाते हैं वे कार्य परहित या परमार्थ की श्रेणी में आते हैं। किसी भूखे को भोजन करवाना, बीमार व्यक्ति की सेवा अथवा ईलाज करवाना, अनाथ कमजोरों की सहायता करना, गरीबों के लिए अस्पताल, विद्यालय, गौ सेवा, राष्ट्रहित में योगदान आदि ये सभी कार्य श्रेष्ठ परहित, परमार्थ के कार्य हैं इन्हें ही याज्ञिक (यज्ञ) कर्म कहते हैं। यह धर्म का भाग भी है।

सन्त तुलसीदास जी ने लिखा है-

'परहित सरस धरम नहिं भाई'

यज्ञ का शाब्दिक अर्थ त्याग, बलिदान और श्रेष्ठ कर्म होता है। श्रेष्ठ कर्म मानवमात्र के लिए धारण करने वाला कर्म है। क्योंकि यह स्वयं को और सभी को सुख पहुँचाने वाला होता है और इस हेतु यज्ञ सर्वोत्तम माध्यम है। इसीलिए प्राचीन काल से ही सनातन धर्म में तो यज्ञ हमारे जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसरों के साथ जुड़ा हुआ है।

व्यापार का, मकान का शुभारम्भ हो, विवाह संस्कार हो, धार्मिक या कोई शुभ अवसर हो यज्ञ करने का विधान बताया गया है। यहाँ तक कि अन्तिम संस्कार (चिता) जो अग्नि के द्वारा किया जाता है, उसे भी अन्त्येष्टि अर्थात् अन्तिम यज्ञ कहा गया है। संसार में अनेक कर्म शुभ कर्म की श्रेणी में आते हैं, किन्तु यज्ञ को उन समस्त उत्तम कर्मों में सर्वोत्तम कर्म 'यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म' कहा गया है। इस संसार को भवसागर की उपमा दी है, सागर पार करना कोई साधारण बात नहीं, उसे पार करने हेतु एक सशक्त साधन होना, आवश्यक है। इस संसार रूपी सागर को पार करने के लिए हमारे ऋषियों ने विद्वानों ने कहा- 'यज्ञौ वै सुतर्मा नौ' अर्थात् यज्ञ संसार रूपी भवसागर को पार करने की नौका बताया गया। यज्ञ से सुख, शान्ति, धर्म, अर्थ इन सभी श्रेष्ठ इच्छाओं की प्राप्ति होती है।

स्वर्ग प्राप्ति

संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है। विशेष सुख को स्वर्ग कहा गया, इसकी प्राप्ति बाहरी अर्थात् शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार के सुखों से ही सम्भव है। भौतिक साधन सिर्फ बाहरी शारीरिक सुखों तक ही सीमित हैं, दोनों प्रकार के सुख इससे सम्भव नहीं हैं। मनुष्य अपने सुख को निरन्तर बढ़ाने का प्रयास करता है, स्वर्ग की कामना करता है। स्वर्ग की अनुभूति विशेष सुखों से अर्थात् आन्तरिक व बाहरी पूर्ण सुख से है। यज्ञ से बाहरी और आन्तरिक दोनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है जो स्वर्ग की अनुभूति करवाती है। ऐसी अनुभूति का माध्यम यज्ञ को बताते हुए कहा गया 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् स्वर्ग की कामना वाले यज्ञ करें। विश्व की प्रथम व परमात्मा की वाणी सनातन वेद ज्ञान है। अथर्ववेद में सर्वसुख के लिए कहा-

'ईजानाः स्वर्गम यान्ति लोकम्'

यज्ञ करने वाले स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

भविष्य पुराण मध्यम पर्व ५/२२ में कहा -

स विप्र पादोदक कर्दमानि,
स वेदशास्त्रध्वनि गर्जितानि।
स्वाहा स्वधाकार निरन्तराणि,
स्वर्गाणि तुल्यानि गृहाणि तानि।।

अर्थात् जिस घर में विद्वानों का सम्मान, आवभगत होती है, जहाँ वेद शास्त्रों की ध्वनि होती है, जिस घर में स्वाहा-स्वाहा की ध्वनि अर्थात् यज्ञ होता है, वृद्ध जनों का सम्मान, आदर होता है वही घर स्वर्ग के समान है। यहाँ ईंट, पत्थर, महंगी सुन्दर वस्तुओं से बने मकान को स्वर्ग नहीं कहा, जिस घर में यज्ञ हो, उसे स्वर्ग की उपमा दी है। क्रमशः

- प्रकाश आर्य महू

शिवराम हरि राजगुरु का जन्म २४ अगस्त १९०८ को महाराष्ट्र के पुणे जिले के खेड़ गाँव में हुआ था। जिसे अब राजगुरुनगर कहा जाता है। वे एक मराठी ब्राह्मण परिवार से थे। उनके पिता का नाम हरिनारायण राजगुरु और माता का नाम पार्वतीबाई था। जब वे केवल छह साल के थे तभी उनके पिता का निधन हो गया था और इसके बाद घर की पूरी जिम्मेदारी उनके बड़े भाई दिनकर ने उठाई। राजगुरु बचपन से ही समझदार, साहसी और तेज दिमाग के थे। उन्होंने अपनी पढ़ाई पुणे में शुरू की और फिर वाराणसी जाकर संस्कृत, हिन्दी और धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया। उसके साथ ही उनके दिल में देश के लिए कुछ कर गुजरने की आग जल रही थी। उन्हें यह बात बिल्कुल सहन नहीं होती थी कि भारत पर अंग्रेज राज करें और यहाँ के लोगों के साथ अन्याय करें। वे सोचते थे कि अगर कोई अपने देश से सच्चा प्यार करता है तो उसे सिर्फ बातें नहीं करनी चाहिए बल्कि जरूरत पड़े तो अपने प्राण भी न्योछावर कर देने चाहिए। इसी सोच ने उन्हें क्रान्ति के रास्ते पर ला दिया। वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़े जहाँ उनकी मुलाकात भगत सिंह, सुखदेव और चन्द्रशेखर आजाद जैसे देशभक्तों से हुई। ये सभी चाहते थे कि भारत एक आजाद और अच्छा देश बने। १९२८ में जब अंग्रेज अफसरों के लाठीचार्ज से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई तो इस बात ने राजगुरु के मन को भीतर से हिला दिया। उन्हें महसूस हुआ कि अब जवाब देना बहुत जरूरी है, और इस जुल्म का हिसाब लिया जाना चाहिए। इसके बाद एक योजना बनी जिसके अनुसार स्कॉट नाम के पुलिस अधिकारी को सजा दी जाएगी जिसने

लाठीचार्ज करवाया था। लेकिन जिस दिन योजना को अंजाम दिया जाना था उस दिन स्कॉट वहाँ नहीं आया, उसकी जगह पुलिस अधिकारी जे.पी. सॉन्डर्स वहाँ मौजूद था। तब राजगुरु ने बिना हिचक, अपने क्रान्तिकारी साथियों के साथ मिलकर सॉन्डर्स को स्कॉट समझकर गोली मार दी। यह कोई निजी बदला नहीं था बल्कि देश के सम्मान के लिए दिया गया जवाब था। यह वही राजगुरु था जिसकी उम्र सिर्फ बीस-बाईस साल की थी, लेकिन जिगर इतना बड़ा था कि अंग्रेजी अफसर को दिनदहाड़े मौत की नींद सुला दिया। राजगुरु के लिए गोली चलाना आसान नहीं था, लेकिन जब बात देश की इज्जत की आई, तो उन्होंने बिना डरे वो कदम उठाया। इस काम के बाद वे कुछ समय तक छिपते रहे लेकिन आखिरकार उन्हें पुणे से गिरफ्तार कर लिया गया। फिर उन्हें लाहौर लाया गया जहाँ भगत सिंह और सुखदेव के साथ उन पर मुकदमा चला जिसे लाहौर षड्यंत्र केस कहा गया। अंग्रेज़ सरकार ने तीनों को फांसी की सजा सुनाई। जिससे पूरे देश की जनता गुस्से से भर गई, आवाज उठाई, लेकिन अंग्रेजों ने एक की ना सुनी और २३ मार्च १९३१ को लाहौर की जेल में तीनों वीरों को फांसी दे दी गई। उस समय राजगुरु की उम्र सिर्फ २२ साल थी। इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी कुर्बानी देना हर किसी के बस की बात नहीं होती। आज भी शिवराम हरि राजगुरु को याद किया जाता है, उनके गाँव का नाम अब राजगुरुनगर हो गया है, और हर साल २३ मार्च को शहीद दिवस मनाकर लोग उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि अगर दिल में सच्चा प्यार हो, तो इंसान अपनी जान भी देश के नाम कर सकता है। राजगुरु जैसे महान् व्यक्ति इतिहास नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की रगों में देशभक्ति का खून बनकर बहते हैं।

– सिद्धम आर्य

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

प्रायः हम सब भली-भाँति सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं। करना भी चाहिए। यही सफलता का मूल मंत्र भी है। इसीलिए हर समझदार व्यक्ति किसी प्रश्न का उत्तर भी अच्छी तरह से सोच-विचार करने के उपरान्त ही देता है। कहा गया है कि 'बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय।' बिलकुल ठीक कहा गया है। गोस्वामी तुलसीदास भी मानस के अयोध्याकांड में एक स्थान पर लिखते हैं कि-

अनुचित उचित काजु किछु होऊ,
समुझि करिअ भल कह सब कोऊ।
सहसा करि पाछें पछिताहीं।
कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं।

अर्थात् कोई भी काम हो यदि उचित अनुचित का विचार करके किया जाए तो सब कोई उसे अच्छा कहते हैं। वेदों में भी यही कहा गया है और विद्वज्जन भी यही कहते हैं कि जो बिना विचारे जल्दी में किसी कार्य को करते हैं वे बाद में पछताते हैं और ऐसे व्यक्तियों को बुद्विमान नहीं कहा जाता।

क्या हम बुद्धिमान हैं अर्थात् सचमुच सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं? हमारा प्रयास तो यही रहता है कि जल्दबाजी में कोई ऐसा कार्य न हो जाए जिससे लाभ के स्थान पर हानि हो जाए। या कोई ऐसी बात मुँह से न निकल जाए जिससे हमारी प्रतिष्ठा अथवा हमारे व्यवसाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े। हम अपनी प्रतिष्ठा व किसी भी कार्य के आर्थिक पहलू पर तो विचार करते हैं लेकिन क्या अपनी सोच-समझ के औचित्य-अनौचित्य पर भी विचार करते हैं? वास्तव में हम किसी भी चीज का व्यावहारिक पक्ष देखते हैं। तो क्या व्यावहारिकता बुरी बात है? व्यावहारिकता बुरी बात नहीं लेकिन जब हम जरूरत से ज्यादा व्यावहारिक हो जाते हैं तो हमारी सोच का नैतिक पक्ष उतना ही कमजोर हो जाता है। हम अन्दर से उतने

सोच समझ वालों को थोड़ी नादानी दे मौला

ही खोखले होते चले जाते हैं। व्यावहारिक होने के साथ-साथ ये भी अनिवार्य है कि हम उदात्त व सकारात्मक जीवन मूल्यों के पक्षधर भी रहें।

बहुत से ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हर कार्य को बहुत सोच-समझकर ही करते हैं लेकिन उनकी सोच अथवा समझदारी किसी काम की नहीं होती। जो लोग अवैधानिक अथवा गलत कार्यों में लिप्त होते हैं वे भी अत्यन्त सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं लेकिन उनकी सोच दूसरे व्यक्तियों, समाज व राष्ट्र के लिए

घातक होती है। ऐसे लोगों की सोच-समझ केवल असंख्य बुराइयों को जन्म देती है। ऐसे तथाकथित समझदार लोग जो व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए दूसरों को आर्थिक हानि अथवा मानसिक कष्ट पहुँचाने से बाज नहीं आते उनकी सोच के विषय में क्या कहें? ऐसी सोच वाले प्रगतिशील बच्चों की समझदारी के विषय में क्या कहा जाए जो कुछ निहित स्वार्थों के लिए बूढ़े माता-पिता को तड़पते हुए छोड़कर अन्यत्र जा बसते हैं। उन्हें परिवार व पोते-पोतियों के प्यार से वंचित करके उनका सर्वस्व छीन ले जाते हैं। उन लोगों की समझदारी को क्या कहें जिनके लिए अपने प्रियजनों के आँसुओं की कोई कीमत नहीं होती और जिनके लिए सामाजिक मान्यताओं का कोई अर्थ अथवा महत्त्व नहीं होता।

यदि हम उचित-अनुचित की बात करें तो हर हाल में गलत का विरोध करना व सही का पक्ष लेना ही उचित माना जाता है लेकिन ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जाएँगे यदि उनको किसी व्यक्ति से सम्बन्ध बनाए रखने से किसी भी तरह का लाभ होता है तो वे उस व्यक्ति की गलत बातों का भी विरोध नहीं करते। ये व्यावहारिक होते हुए भी उचित नहीं कहा जा सकता लेकिन आज यही हो रहा है। गलत का विरोध न करना अथवा अपने हित के लिए गलत का समर्थन करना दोनों स्थितियाँ ही मनुष्यता के लिए घातक हैं। दूसरी ओर यदि हमें अन्यत्र कुछ अधिक आर्थिक लाभ होने की सम्भावना नजर आ रही होती है तो हम आत्मीय रिश्ते-नातों को भी भूल जाते हैं। भूल ही नहीं जाते तोड़ भी डालते हैं। पैसों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं आपसी सम्बन्ध और एक दूसरे पर विश्वास। और सबसे बड़ी बात तो ये है कि उचित निर्णय लेने अथवा सही बात कहने के लिए ज्यादा सोचने-समझने की जरूरत ही नहीं होती। सच बोलने और ईमानदारी के रास्ते पर चलने के लिए सोचना नहीं पड़ता।

आज हममें से अधिकतर व्यक्ति अधिकारों की बात तो करते हैं लेकिन कर्तव्यों की नहीं। अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जुड़े होते हैं। लेनदारियाँ ही नहीं देनदारियाँ भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। प्रतिबद्धता भी कोई चीज होती है। हम बहुत समझदार होते जा रहे हैं। हमें देनदारियाँ याद नहीं रहतीं। कोई याद दिलवाए तो कह देते हैं कि हमें पता नहीं था। हम कृतज्ञता नामक तत्त्व को भूलते जा रहे हैं। हमारे विकास में सम्पूर्ण समाज का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में जो योगदान है उसका हमें भान ही नहीं। यदि हमें उसका भान है भी तो हम उसे स्वीकार करने के बजाय उसे महत्त्वहीन व अपने काल्पनिक योगदान को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के विषय में चिन्तन करने लग जाते हैं। हमारे अति समझदारी भरे निर्णयों का अन्य लोगों अथवा समाज पर क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा हम कम ही सोचते हैं क्योंकि हम आत्मकेन्द्रित होते जा रहे हैं।

यदि हमें बहुत अधिक सोच-समझकर बात करने अथवा व्यवहार करने की जरूरत नजर आ रही है तो इसका सीधा सा अर्थ है कि हमारा परस्पर विश्वास और हमारे आपसी सम्बन्ध खण्डित हो चुके हैं अथवा खण्डित होने के कगार पर हैं। बहुत अधिक सोच-समझकर बात करने अथवा व्यवहार करने का अर्थ है कि हम स्वाभाविकता का त्याग करके छल-कपट का आश्रय लेने जा रहे हैं। हमारे सोच-समझकर काम करने अथवा बात करने का कोई महत्त्व नहीं यदि उससे झूठ-फरेब का साम्राज्य प्रतिष्ठित होता है और हमारा आपसी विश्वास खण्डित होता है। ऐसी समझदारी का कोई मूल्य नहीं जिससे घर-परिवार, समाज अथवा राष्ट्र विघटित होता है। हमारी ऐसी समझदारी जिससे हमारे बच्चों में हमसे भी ज्यादा ऐसी समझदारी विकसित हो जाए सचमुच बहुत भयानक है। ज्यादा समझदारी वास्तव में हमारे लिए अभिशाप के समान होती है। इस संदर्भ में निदा फ़ाज़ली साहब का एक शेर याद आ रहा है-

दो और दो का जोड़ हमेशा चार कहाँ होता है,
सोच-समझ वालों को थोड़ी नादानी दे मौला।

जो हमेशा दो और दो चार के फेर में रहते हैं उनके

निर्णयों को सही नहीं कहा जा सकता। घोर व्यावसायिकता व स्वार्थपरायणता से तटस्थ होकर ही हम सही निर्णय ले सकते हैं। इसके लिए ज्यादा समझदारी की जरूरत नहीं। दिन को दिन और रात को रात कहने के लिए क्या सचमुच सोचने-समझने की जरूरत होगी? मान लीजिए कि दिन में धूप खिली हुई है और कोई पूछे कि आज कैसा मौसम है तो इसका एक ही उत्तर होगा कि आज धूप खिली हुई है। इसमें सोचने की क्या बात है? जब कोई चीज पूरी तरह से स्पष्ट हो और हम बिना बात सोचें कि क्या जवाब देना है तो हम गलत नहीं बहुत गलत दिशा में जा रहे हैं। यह संकेत है कि हम जरूरत से ज्यादा समझदार हो रहे हैं इसलिए अब थोड़ा नादान अथवा स्वाभाविक बनने का समय आ गया है।

इसका ये अर्थ बिलकुल नहीं कि हम सही दिशा में सोचना बन्द कर दें। हम सही सोचें और गलत का स्पष्ट रूप से विरोध करें। जब हम सही सोच और स्पष्टता से बचना चाहते हैं तभी हम जरूरत से ज्यादा समझदारी का प्रदर्शन करने लगते हैं। हम अपनी अज्ञानता अथवा कमियों को छुपाने के लिए भी ज्यादा समझदारी की बातें करने लगे हैं। ये भी सच्चाई पर परदा डालने जैसी ही बात है। सच्चाई पर परदा डालने के लिए ही यदि हम भली-भाँति सोच-समझकर बातें करते हैं तो इसे कैसे महत्त्व दिया जा सकता है? यदि हम सच्चाई पर परदा डालने के बजाय उसे सरलता से स्वीकार कर लें तो इससे बड़ी समझदारी की बात हो ही नहीं सकती। लाभ अथवा हानि का आकलन व्यापार में किया जाता है सम्बन्धों के निर्वहन में नहीं। यदि हम हर समय मात्र लाभ अथवा हानि के आकलन से ऊपर उठकर अपनी सोच और अपने आचरण की पवित्रता पर ध्यान दें तो हमारा जीवन सचमुच बहुत सुन्दर हो जाए। इस सुन्दर संसार के सभी व्यक्ति अपने हो जाएँ।

आज हमें जीवन के हर क्षेत्र में अधिक तथाकथित समझदार बनने की अपेक्षा थोड़ा नादान बनने की जरूरत है। बच्चों को हम नादान कह देते हैं क्योंकि वे बिना सोचे-समझे कि इसका क्या परिणाम होगा सच बोल देते हैं। ये नादानी नहीं सरलता व निष्कपटता है। बच्चों जैसा सरल व निष्कपट आचरण होने का अर्थ है हमें सबका स्नेह मिलेगा ही। हमारे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि हम बच्चों की तरह नादान अर्थात् सरल व निष्कपट बनने का प्रयास करें। वैसे इसमें प्रयास करने जैसी भी कोई बात नहीं। स्वाभाविकता के लिए किसी प्रकार के विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। अस्वाभाविक, गलत अथवा काल्पनिक तथ्यों को स्थापित करने के लिए ही अधिक प्रयास करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के प्रयासों में ही हमारी अधिकांश ऊर्जा का दुरुपयोग हो जाता है।

जो कम समझदार अथवा नादान व्यक्ति होता है उसकी ऊर्जा का दुरुपयोग नहीं होता क्योंकि वो एक दम से गलत को गलत और सही को सही कह देता है इसलिए हमें ज्यादा समझदार बनने की बजाय थोड़ा नादान अथवा सरल ही बने रहने की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि हमारी ऊर्जा का सही व सार्थक उपयोग हो सके। इसलिए सोच-समझकर लिए गए ऐसे निर्णयों का कोई मूल्य नहीं जिनके कारण हमारी ऊर्जा का दुरुपयोग हो और साथ ही सत्य का दम घुट जाए और असत्य प्रतिष्ठित हो जाए। हमारी सोच-समझ बस ऐसी हो जिससे उदात्त जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हो सकें। यह तभी सम्भव है जब हमारी सोच केवल सकारात्मक हो। हम पक्षपातरहित होकर निडरतापूर्वक अपनी बात कहने का साहस जुटा पाएँ। इसके लिए अधिक समझदारी की जरूरत ही नहीं। मात्र थोड़ी सी नादानी अथवा सरलता ही इसके लिए पर्याप्त होगी।

- सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६ सी., पीतमपुरा, दिल्ली - ११००३४110034
चलभाष- ९५५५६२२३२३
Email : srgupta54@yahoo-co-in

समझें तो आर्य समाज है क्या?

गतांक से आगे ......

जिस प्रकार वेद को ब्राह्मणों ने ताले में बन्द कर रखा था। ना स्वयं पढ़ते थे और ना दूसरों को पढ़ने देते थे। साथ ही स्वामी शंकराचार्य के अवैदिक सूत्रों का सहारा लेकर शूद्रों एवं स्त्रियों को वेदाध्ययन के सम्बन्ध में बड़ा कठोर दण्ड का विधान किया था। वह कहा करते थे कि 'वेद सुनने वाले शूद्र के कान में लाख और शीशा तपाकर डालना चाहिए। उच्चारण करें तो जीभ काट लेनी चाहिए। और यदि अर्थ धारण करे तो शूद्र का शरीर फाड़ डालना चाहिए।' स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस प्रकार के अमानुषिक कृत्यों को दूर किया और सब के लिए वेदों का द्वार खोल दिया। साथ ही आर्य समाज ने शुद्धि का कार्य प्रारम्भ कर केवल हिन्दू ही नहीं अपितु जो हमारे भाई विधर्मी बन गए थे, उनके लिए शुद्धि का द्वार खोलकर हिन्दुओं में मिला लेने का कार्य किया। आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन चलाकर बिछड़े भाइयों को गले लगाने का काम किया।

इसका इतना बड़ा प्रभाव हुआ कि जो हिन्दू अब तक मार खाते रहे थे और अपने घर को ही नहीं बचा पाए थे, अब वह स्वामी दयानन्द सरस्वती की कृपा से अपने घर की रक्षा करने में समर्थ हो गए, और शत्रु के घर पर अधिकार करने का हौसला करने लगे। हिन्दुओं की मार खाती हुई सेना आर्य समाज के झण्डे के नीचे एकत्र होकर शत्रु पर धावा बोलने का हौसला करने लगी। इस सम्बन्ध में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने जो कहा वह ध्यातव्य है–

'राम मोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लड़ाई लड़ी थी, जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोड़ा बहुत श्री गणेश कर दिया। क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश में जहाँ हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहाँ उसमें ईसाई और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे, कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो किन्तु बदले में हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु इस मेधावी और योद्धा संन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं प्रत्युत् जो बात राम मोहन और रानाडे के ध्यान में भी नहीं आई थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं उनके शिष्य आर्य समाजी आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा कर दी कि धर्मच्युत् हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है एवं अहिन्दू भी यदि चाहे तो वेद धर्म में प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी। यह जागृत हिंदुत्व का समरनाद था और सत्य ही रणारुढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई नहीं हुआ।''

यह तो इतिहास के विकास का तुक कुछ ऐसा हुआ कि हिन्दू स्वामी दयानन्द को रणारुढ़ हिन्दुत्व का

निर्भीक नेता और आर्य समाज को हिन्दुओं का रक्षक मानने लगे, और इसमें सच्चाई भी है। फिर भी आर्य समाज का कर्म क्षेत्र और स्वामी दयानन्द जी की शिक्षा की परिधि तो विश्वव्यापी है। सम्पूर्ण संसार का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निधन के उपरान्त अनेक महापुरुषों ने अपने गुरु एवं आचार्य के स्वप्न को साकार करने के लिए भागीरथ पुरुषार्थ किया। स्वामी जी के निधन के समय जिन्होंने साक्षात् स्वामी जी को परलोक गमन करते हुए देखा इसमें पंडित गुरुदत्त

विद्यार्थी जी सौभाग्यशाली सिद्ध हुए। अपने गुरु के प्रस्थान करने के बाद उन्होंने संकल्प लिया- गुरु जी आप चल दिए। कोई बात नहीं! अब मैं आपके कार्य को पूरा करूँगा।

एक ओर जहाँ पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने वेदों की वैज्ञानिकता को सिद्ध करने में अपने जीवन को लगाया। वहीं दूसरी ओर धर्मवीर पंडित लेखराम जी ने शास्त्रार्थ का बिगुल बजाकर विधर्मियों के गढ़ को छिन्न-भिन्न करने का बीड़ा उठा लिया। आगे बढ़कर देखें तो अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वेदों के विद्वान् तैयार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर दी, जहाँ से सैंकड़ों विद्वान् तैयार हुए और आर्य समाज की छत्रछाया में उन्होंने देश देशान्तर में वेदों का प्रचार किया। साथ ही जाति प्रथा के रोग से ग्रसित हिन्दू जाति के अभिन्न अंग जो दलित भाई थे, समाज में उपेक्षा के कारण ईसाई और मुसलमान बनते जा रहे थे, इन्होंने उनका पूरा सम्मान करते हुए शुद्धि आन्दोलन चलाकर उनके घर वापसी का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

इन्होंने जन्मना जाति व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए कर्म के आधार पर सामाजिक संरचना को महत्व दिया, साथ ही ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र कर्म के आधार पर हैं यह घोषित किया। उन्होंने कहा कि शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता है अगर उसका कर्म उच्च कोटि का एवं वेदानुकूल हो। उनके आह्वान पर लाखों दलितों ने घर वापसी का कार्य किया। महात्मा हंसराज जी ने त्याग तपस्या के बल पर शिक्षा के क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया।

इस प्रकार आर्य समाज के नेतृत्व में वेदों के प्रचार की एक शृंखला चल पड़ी जिस शृंखला के साक्षी बने स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी भूमानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी, महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी धुर्वानन्द जी, स्वामी रामानन्द जी, महात्मा अमर स्वामी जी आदि-आदि जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बतलाए गए संन्यास धर्म का पालन करते हुए संसार का उपकार किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की महती कृपा से आर्य समाज ने बहुत बड़े-बड़े विद्वान् पंडित पैदा किए, जिसमें पंडित आर्य मुनि जी, पंडित शिव शंकर शर्मा काव्य तीर्थ, पंडित क्षेमकरण दास त्रिवेदी, पंडित जयदेव विद्यालंकर, पंडित भोजदत्त जी, पंडित बुद्धदेव विद्यालंकर, पंडित मंसाराम वैदिक तोप, पंडित घासीराम जी, पंडित रामचन्द्र देहलवी जी, पंडित भगवदत्त जी, पंडित गणपति शर्मा जी, पंडित अयोध्या प्रसाद जी, पंडित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय, पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी, पंडित युधिष्ठिर मीमांसक जी, आचार्य रामदेव जी, पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति जी, पंडित लोकनाथ तर्क वाचस्पति जी, आदि-आदि ने अपनी विद्वत्ता एवं पांडित्य के बल पर मजहबी

दुनिया में हलचल मचा दी और वैदिक धर्म का परचम लहरा दिया।

विदेश की धरती पर स्वामी जी की प्रेरणा से श्याम जी कृष्ण वर्मा, भवानी दयाल संन्यासी, लाला हरदयाल, वीर सावरकर, सरदार उधम सिंह आदि ने माँ भारती एवं आर्य समाज की सेवा में अपने जीवन न्योछावर कर दिए।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार अजीत सिंह, सरदार किशन सिंह, सरदार भगत सिंह, करतार सिंह सराभा, अशफाकउल्ला खां आदि ने आर्य समाज से प्रेरणा प्राप्त कर माँ भारती की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया।

आजादी के समय आर्य समाज मंदिर सम्पूर्ण देश में क्रान्ति के केन्द्र बन गए थे। सरदार भगत सिंह की तीन पीढ़ियाँ आर्य समाजी थीं और सरदार भगत सिंह के यज्ञोपवीत के अवसर पर उनके दादाजी ने भगत सिंह को मातृभूमि के लिए समर्पित कर देने की घोषणा की थी। उनका यज्ञोपवीत संस्कार आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् पंडित लोकनाथ तर्क वाचस्पति ने करवाया था, जिनके पौत्र राकेश शर्मा अंतरिक्ष यात्री बने।

आर्य समाज ने अनेक धार्मिक, सामाजिक आन्दोलन भी चलाए, जिनमें इन आन्दोलनों का नाम प्रमुखता से हम ले सकते हैं। आर्य समाज ने हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों के लिए हैदराबाद की रियासत में सत्याग्रह किया और इन सत्याग्रहियों को स्वतंत्रता

सेनानी के रूप में भारतवर्ष की सरकार ने स्वीकार किया, और उन्हें आजीवन पेंशन दी। हैदराबाद के नवाब ने हिन्दू मंदिरों में शंख, घंटे, घड़ियाल बजाने पर प्रतिबन्ध लगाया था। हिन्दुओं के सार्वजनिक धार्मिक और सामाजिक कार्यों पर भी प्रतिबंध लगाया था। इन सब के विरुद्ध आर्य समाज ने आन्दोलन किया और हैदराबाद की नवाबी सरकार ने बाध्य होकर इन प्रतिबन्धों को हटा दिया। इस आन्दोलन में बहुत सारे आर्यवीरों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दीं।

स्वतंत्रता के पश्चात् सिन्ध की लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध की घोषणा की। आर्य समाज ने यह चुनौती भी स्वीकार की और सारे हिन्दुओं ने मिलकर सम्पूर्ण देश में ऐसा आन्दोलन किया कि सिन्ध की लीगी सरकार झुक गई और सारे प्रतिबंध हटा दिए।

विभाजित पंजाब में कैरो सरकार ने हिन्दी भाषा के साथ पठन-पाठन में सौतेला व्यवहार किया तो आर्य समाज ने पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन किया और हिन्दी को उसका प्रतिष्ठित पद प्राप्त कराया।

कश्मीर में शेख अब्दुल्ला की सरकार ने एक गुप्त आदेश प्रसारित करके सत्यार्थ प्रकाश को सरकारी पुस्तकालय में रखे जाने पर प्रतिबंध लगाया था। यह आदेश था तो गुप्त ही, किन्तु जब इसका पता आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को ज्ञात हुआ तब सार्वदेशिक सभा के तात्कालिक प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी के उग्र विरोध के कारण शेख अब्दुल्ला को मुँह की खानी पड़ी और उन्होंने वह निन्दनीय गुप्त आदेश निरस्त कर दिया।

इस प्रकार आर्य समाज ने देश धर्म की रक्षा के लिए अनगिनत कार्य किए हैं। आर्य समाज ना कोई मत है, ना कोई सम्प्रदाय, आर्य समाज वह संगठन है जो सम्पूर्ण विश्व में वेदों की शिक्षा का प्रचार करना चाहता है। ऋषि-मुनियों के ज्ञान का प्रसार करना चाहता है। आर्य समाज मनुष्यमात्र को वेद भक्त बनाना चाहता है। आर्य समाज जैसे ईसाईयों से कहता है कि बाइबल जाल ग्रन्थ है, इसे छोड़कर वेदों की शिक्षा अपनाओ। वैसे ही मुसलमान से भी कहता है कि कुरान प्रभु की वाणी नहीं है, इसे छोड़कर वेदों

को अपनाओ। इस प्रकार हिन्दुओं से भी कहता है की श्रीमद् भागवत आदि पुराण ग्रन्थ वेद विरुद्ध हैं और कलह बढ़ाने वाले हैं। इन्हें त्याग कर वेदों की शरण में जाना उचित है। मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, जन्मना वर्ण व्यवस्था, आदि अवैदिक असत्य सिद्धांत हैं। परम प्रभु परमात्मा की उपासना योग दर्शन के अनुसार करनी चाहिए। माता-पिता गुरु की सेवा ही श्राद्ध है। यह जीवितों का ही होना चाहिए। मरने के पश्चात् जीव प्रभु की व्यवस्था में अपने कर्मों का फल भोगता है। ब्राह्मण आदि वर्ण गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार मानना चाहिए इसी में संसार का कल्याण होगा।

आर्य समाज ने क्या दिया

- ☞ आर्य समाज ने मनुष्य को ईश्वर से जुड़ने की कला दी। आर्य समाज ने वेदों का अनुपम भाष्य दिया।
- ☞ आर्य समाज ने ब्रह्मा से जैमिनी मुनि पर्यन्त ऋषियों की परम्परा को आगे बढ़ाया।
- ☞ आर्य समाज ने मनुष्य मात्र को वेद ज्ञान की गंगा में स्नान करने का अवसर प्रदान किया।
- ☞ आर्य समाज ने एक ईश्वर की उपासना पद्धति सिखलायी। आर्य समाज ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से विश्व में सनातन संस्कृति की रक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।
- ☞ आर्य समाज ने संस्कार विधि के माध्यम से मानव निर्माण की अद्भुत शृंखला प्रदान की।
- ☞ आर्य समाज ने व्यवहार भानु के माध्यम से संसार को व्यवहार का पाठ पढ़ाया।
- ☞ आर्य समाज ने आर्योद्देश्यरत्नमाला के माध्यम से आर्यों का उद्देश्य समझाया।
- ☞ आर्य समाज ने आर्यों को उसके मन्तव्य का पाठ पढ़ाया। आर्य समाज ने पंचमहायज्ञ के माध्यम से शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति का पाठ पढ़ाया।
- ☞ आर्य समाज ने यज्ञ के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया
- ☞ आर्य समाज ने फलित ज्योतिष का विरोध कर कर्मफल की व्यवस्था स्थापित की।
- ☞ आर्य समाज ने महिलाओं को जगदम्बा के सिंहासन पर बिठाते हुए उन्हें मानव-निर्माण का प्रथम गुरु बताया।
- ☞ आर्य समाज ने पाखण्ड, अंधविश्वास, अनाचार, दुराचार, व्यभिचार आदि का जबरदस्त विरोध किया।
- ☞ आर्य समाज ने छुआछूत, भेदभाव, उच्च नीच जाति पाति का प्रबल खण्डन किया।
- ☞ आर्य समाज ने सामाजिक उन्नति के लिए वर्णव्यवस्था पर बल दिया।
- ☞ आर्य समाज ने जन्म से नहीं कर्म से ब्राह्मण बनने की प्रेरणा दी।
- ☞ आर्य समाज ने वेदों से हमारा परिचय करवाया।
- ☞ आर्य समाज ने राम, कृष्ण, शिव, हनुमान आदि को महापुरुष बताते हुए उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी।
- ☞ आर्य समाज ने महापुरुषों पर लगे कलंक को मिटाने का काम किया।
- ☞ आर्य समाज ने बच्चों, नौजवानों को राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाया।
- ☞ आर्य समाज ने प्रत्येक मनुष्य को संध्या, स्वाध्याय, सत्संग प्रतिदिन करने का निर्देश दिया।
- ☞ आर्य समाज ने जड़ पूजा का खण्डन करते हुए जीवित माता-पिता गुरु आदि का सत्कार करने की प्रेरणा दी।
- ☞ आर्य समाज ने मृतक श्राद्ध का जोरदार खण्डन किया।
- ☞ आर्य समाज ने संसार के समस्त प्राणियों की रक्षा हेतु बलिवैश्व देवयज्ञ का विधान दिया।
- ☞ आर्य समाज ने विधर्मियों के मंसूबे पर पानी फेर दिया।

इस प्रकार आर्य समाज के अनगिनत उपकार बताए जा सकते हैं, जिसने मानवता के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया। **क्रमशः ....**

▣▣▣ आर्योपदेशक, पटना (बिहार), चलभाष- 7717766151

परमात्मा की अपार महिमा व उसकी अदभुत् सृष्टि

उपरोक्त मंत्र में परमात्मा ने उपदेश किया है कि वह ही सब लोक-लोकान्तरों का रचने वाला है, वह ही सब ग्रह नक्षत्रों का भ्रमण कराता है। वह ही सबसे महान् है। वह ही मोक्षादि सब सुखों का देने वाला है। आओ उस परमपिता परमेश्वर की महिमा का थोड़ा दिग्दर्शन करें-

जिस जमीन पर हम रहते हैं वह एक आम आदमी के मुकाबले बीस खरब गुणा बड़ी है जबकि हमारा सूरज हमारी जमीन से भी दस लाख गुणा बड़ा है। इसके मुकाबले में ईटाकैरीनाई (Eta Carinae) नाम का मशहूर सितारा हमारे सूरज से भी पचास लाख गुना बड़ा है। इसके बाद बीटल जूस (Betel Geuse) नाम के सितारे का नम्बर आता है जो हमारे सूरज से तीस करोड़ गुना बड़ा है। और फिर वी.वाई. कैनिसमैजोरिस (VY Canis Majoris) नाम के सितारे का नम्बर आता है जो कि हमारे सूरज से एक अरब गुना बड़ा है और इन जैसे अरबों सितारे हमारी कहकशां (Galaxy) में मौजूद हैं।

जिस आकाश गंगा/कहकशां (Galaxy) में हम रहते हैं उसका नाम मिल्की वे (Milky Way) है और इसमें हमारे सूरज जैसे तीन सौ अरब से ज्यादा सूरज मौजूद हैं और यह कहकशां इतनी बड़ी है कि अगर हम किसी ऐसी चीज पर सवार हों जो एक सेकण्ड में तीन लाख किलोमीटर का फासला तय करती हो तो इसको भी हमारी कहकशां को पार करते करते एक लाख साल लग जायेंगे। अब हम अपनी पड़ोसी कहकशां में चलते हैं जिसका नाम एंड्रोमेडा (Andromeda) है, और यह कहकशां हमारी कहकशां से दोगुनी है लेकिन यह भी छोटी ही समझिये क्योंकि एम ८१ (M81) नामी कहकशां हमारी कहकशां से साठ गुना बड़ी है। और आई. सी-१०११ (IC-1011) नाम की कहकशां हमारी कहकशां से ६०० गुना बड़ी है।

लेकिन अभी यह सिलसिला खत्म नहीं हुआ। क्या आपको मालूम है कि जिस तरह सितारों से कहकशाएं बनती हैं उसी तरह कहकशाओं से कलस्टर (Cluster) बनते हैं और जिस कलस्टर में हमारी कहकशां है उसका नाम विरगो (Virgo) है और सिर्फ इस एक कलस्टर में ४७००० कहकशाएँ हैं। और मामला अभी यही खत्म नहीं हुआ, कलस्टर भी आपस में मिलके सुपर कलस्टर (Super Cluster) बनाते हैं और जिस सुपर कलस्टर में हम रहते हैं उसका नाम लोकल सुपर कलस्टर (Local Super Cluster) है। और इस सुपर क्लस्टर में लगभग १०० क्लस्टर हैं और इस सुपर क्लस्टर जैसे लगभग एक करोड़ सुपर क्लस्टर हमारी कायनात में मौजूद हैं जो मात्र बिन्दुओं की तरह की नजर आते हैं।

इस सबको सिर्फ एक सर्वव्यापी निराकार परमात्मा ने बनाया है, धारण किया है और यही इन सबकी प्रलय करता है। इस अद्भुत सृष्टि का बनना बिगड़ना प्रवाह से अनादि है, सृष्टि उत्पत्ति काल ४३२ करोड़

वर्ष है और प्रलय काल भी ४३२ करोड़ वर्ष है। समस्त जीवों को उनके कर्मानुसार फल देना वा भिन्न भिन्न योनियों में भेजना भी इसी महान परमेश्वर का काम है।

देखो! सर्वव्यापी निराकार परमेश्वर ने शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा-कला का स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के भागों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागीकरण, कला-कौशल से स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है? नाना प्रकार के रत्न धातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार के वटवृक्षादि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण, चित्ररूपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, मूल निर्माण, मिष्ट, क्षार, कटुक, कषाय, तिक्त, अम्लादि विविध पत्र, पुष्प, फल-अन्न, कन्द-मूलादि की रचना, अनेकानेक करोड़ों भूगोल, सूर्य, चन्द्रादि लोकनिर्माण, धारण, भ्रमण, नियमों में रखना आदि कार्यों को परमेश्वर के बिना कोई भी नहीं कर सकता। अतः ईश्वर की परम सत्ता को मानना और उसकी उपासना करना समस्त बुद्धिजीवी मनुष्यों को उचित है। (सत्यार्थ प्रकाश)

- डॉ. मुमुक्षु आर्य
सेक्टर- 25, नोएडा

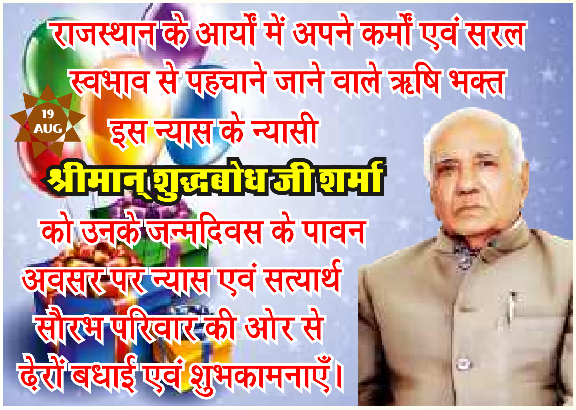

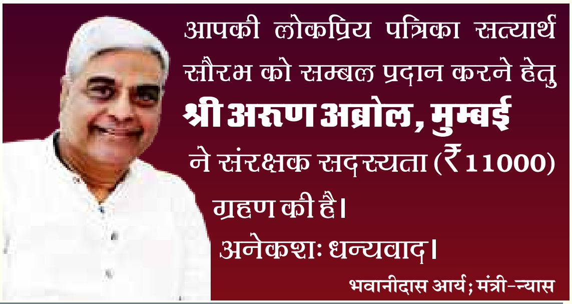

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

थाइराइड ग्रंथी विकार एवं चिकित्सा

हमारे शरीर में बहुत सी ग्रन्थियाँ होती हैं। इनमें से कुछ अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ होती हैं और कुछ बहिस्रावी। इनके अन्दर से निकलने वाले स्राव को हार्मोन कहते हैं। ये हार्मोन हमारे रक्त में मिलकर शरीर के बहुत से कार्यों को सम्पन्न कराते हैं और इनसे शरीर का पोषण होता है। इन ग्रन्थियों की विकृति से शरीर में अनेक प्रकार की समस्यायें पैदा हो जाती हैं। इन ग्रन्थियों की कार्यक्षमता धात्वाग्नि पर आधारित है और धात्वाग्नियाँ जठराग्नि पर आधारित हैं। जठराग्निमांद्य होने पर धात्वाग्निमांद्य होकर आमदोष की उत्पत्ति होती है और इस आमदोष के कारण इन ग्रन्थियों के स्रोतसों में अवरोध होने से ये विकृत हो जाती हैं।

हमारे गले के अन्दर थाइराइड नाम की एक अन्तःस्रावी ग्रन्थी होती है, इसको अवटुका ग्रन्थी भी कहते हैं। इसका वजन २० से २५ ग्राम के लगभग होता है। इससे निकलने वाले स्राव को थायरोक्सिन हार्मोन कहते हैं। इस हार्मोन से शरीर की चयापचय की क्रिया नियन्त्रित होकर शरीर में शक्ति पैदा होती है। हम जो भोजन ग्रहण करते हैं, जठराग्नि द्वारा उसका पाचन होकर शरीर के प्रत्येक कोषों में उसके द्वारा प्राप्त पौष्टिक द्रव्य पहुँचता है और कोषों में जो चयापचय की क्रिया होती है, उसके द्वारा शरीर में शक्ति और उर्जा पैदा होती है जिसके द्वारा शरीर अनेक प्रकार के कर्म करता है। इस चयापचय की क्रिया को मैटाबोलिज्म कहते हैं। इस मैटाबोलिज्म की क्रिया को नियन्त्रित करने का कार्य थायराइड ग्रन्थी अपने थायरोक्सिन हार्मोन द्वारा सम्पन्न कराती है। जब थायरोक्सिन हार्मोन की मात्रा कम हो जाती है तब शरीर की चयापचय की क्रिया भी कम हो जाती है, इससे शरीर में उत्पन्न होने वाली उर्जा व शक्ति भी कम मात्रा में उत्पन्न होती है। जब इस हार्मोन की मात्रा बढ़ जाती है तब भी चयापचय की क्रिया के बढ़ जाने से शरीर में कई प्रकार की विकृतियाँ हो जाती हैं। थायराइड ग्रन्थी के हार्मोन के कम मात्रा में उत्पन्न होने की विकृति को हायपोथायरोडिज्म व अधिक मात्रा में उत्पन्न होने वाली विकृति को हायपरथायरोडिज्म कहते हैं।

हायपोथायरोडिज्म- जब थायराइड ग्रन्थी का स्राव कम हो जाता है तब यह रोग होता है। यह मन्दताजन्य व्याधि है। यदि किसी प्राणी में से इस ग्रन्थी को निकाल दिया जाये या किसी बच्चे की यह ग्रन्थी विकार ग्रस्त होकर कम स्राव उत्पन्न करे तो उस समय जो लक्षण प्रकट होते हैं उनको क्रीटिनिज्म और उस बालक को क्रीटिन कहते हैं। इस रोग के कारण धातुपाक की क्रिया बहुत कम हो जाती है, इस मन्द स्राव के कारण निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं-

त्वचा रुक्ष व खरस्पर्श हो जाती है, बाल झड़ने लगते हैं, मांसपेशियाँ दुर्बल हो जाती हैं, अस्थियों की पुष्टि और विकास कम हो जाता है, अस्थियों में वक्रता आ जाती है, त्वचा के नीचे व आँखों के नीचे मेद का संचय हो जाता है, शरीर का वजन बढ़ जाता है, रक्त की कमी हो जाती है, शरीर का तापमान कम रहता है, रोगी मानसिक दृष्टि से मन्द हो जाता है, हृदय की गति मन्द रहने से नाड़ी की गति भी मन्द रहती है, हृदय विस्फारित हो जाता है, रक्त परिभ्रमण की गति मन्द हो जाती है, आयोडीन का प्रमाण कम हो जाता है, रक्त में सीरम कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ जाती है और शुगर की मात्रा कम हो जाती है। हीमोग्लोबिन की मात्रा कम होने से पाण्डू, नपुंसकता, बन्ध्यत्व

इत्यादि रोग हो जाते हैं। स्त्रियों में मासिक स्राव कम या बन्द हो जाता है। ऐसे रोगी प्रमादी होते हैं, बिना कारण थकान महसूस होती है, मानसिक कष्ट वा चित्तभ्रम होता है, बहरापन, होता है, मांसपेशी व सन्धियों मे वेदना होती है। मांसपेशियों में कम्पन होता है, रोगी स्तब्ध जैसा रहता है। स्मरण शक्ति कम हो जाती है तथा उनकी वाणी अस्पष्ट होती है। शरीर भारी होता है, श्वसन क्रिया मन्द हो जाती है, स्वर भारी हो जाता है, स्वरभंग हो जाता है। बच्चों में इस रोग के होने पर बुद्धि प्रभावित होती है, बालक मूढ़ हो जाता है। बालक की जिह्वा लम्बी हो जाती है और बाहर दिखाई देती है। उसकी आँखों पर सूजन आ जाती है और नासिका वक्र हो जाती है। उदर की वृद्धि हो जाती है, उसके बाहू व अंश प्रदेश पर भेदजन्य ग्रन्थियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

चिकित्सा

इस रोग में शरीर के भीतर अग्नि की क्रिया अल्प होने के कारण अग्निवर्धक चिकित्सा करनी चाहिए। चर्बीयुक्त व प्रोटीनयुक्त गुरु आहार बन्द करने चाहिए। घी, तेल, तले हुए पदार्थ, दही, उड़द की दाल आदि गुरु आहार बन्द करने चाहिए। इसमें मूंग, मोठ, चावल, मूंग और चावल की खिचड़ी, मूंग के पापड़, चावल के पापड़ आदि लाभदायक हैं। सैंधा नमक व आयोडाइज्ड नमक लाभदायक हैं। अंजीर व डंठलयुक्त ताम्बूल में आयोडीन होने से इस रोग में पथ्य हैं।

हाइपोथायरोडिज्म में निम्नलिखित औषधियाँ अत्यन्त लाभप्रद हैं-

१. कांचनार गुग्गुलु, आरोग्यवर्धिनी वटी और पुनर्नवादि मण्डूर, इन तीनों को २०-२० ग्राम की मात्रा में लेकर पीसकर मिला लेवें। अब इनकी ६० पुड़िया बना लेवें। १-१ पुड़िया सुबह-शाम गर्म पानी से लेवें।

२. कुटकी, अजमोद व विडंग इन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर कूटकर चूर्ण बना लेवें। अब इसे भोजन के बाद ३ से ५ ग्राम की मात्रा में गर्म जल से लेकर ऊपर से २०-२० मिली लीटर पुनर्नवासव बराबर जल मिलाकर पीवें।

त्रिफला चूर्ण- २ चम्मच रात को गर्म जल से लेवें।

उपरोक्त चिकित्सा नियमित लेने से हायपोथायरोडिज्म में बहुत अच्छा लाभ हो जाता है।

हायपरथायरोडिज्म- इस रोग में थायरोक्सिन हार्मोन अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है इससे नाड़ी संस्थान की क्षुब्धता बढ़ जाती है। हाथों में कम्पन होने लगता है, रोगी का धातुपाक बढ़ जाता है। हृदय स्पन्दन अधिक हो जाता है। अधिक भूख लगने से अधिक मात्रा में भोजन करने पर भी उसका शरीर क्षीण हो जाता है। रोगी उग्र स्वभाव का हो जाता है, पसीना अधिक आता है व रक्त शर्करा को प्रमाण बढ़ जाता है। ऐसे रोगी को उष्णता पसन्द नहीं होती है।

चिकित्सा

आयुर्वेदानुसार पित्तवृद्धि के कारण इस रोग की वृद्धि होती है, अतः इसमें पित्तशामक चिकित्सा करनी चाहिए। हायपरथायरोडिज्म में निम्नलिखित योग शीघ्र लाभकारी सिद्ध हुआ है।

१. शतावरी चूर्ण ५ ग्राम, प्रवाल पिष्टी ½ ग्राम, इन दोनों को मिलाकर ऐसी १-१ मात्रा सुबह-शाम दूध से देवें।

२. प्रवाल पंचामृत ½ ग्राम, कामदुधा रस ½ ग्राम, शतावरीघृत ५ ग्राम, इन तीनों को मिलाकर ऐसी १-१ मात्रा सुबह-शाम देवें ।

३. त्रिफला चूर्ण या अविपत्तिकर चूर्ण ५ ग्राम की मात्रा में रात्रि को उष्ण जल से सेवन करे।

पथ्य- घी, दूध और गेहूँ इसमें पथ्य है।

अपथ्य- दही, मिर्च, अचार अधिक नमक युक्त पदार्थ; तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, मद्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन नहीं करें।

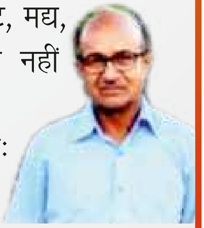

इस रोग में वजन कम होता है अतः द्राक्षावलेहऔर धात्री रसायन के सेवन से वजन बढ़ जाता है।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक
१३ श्री राम नगर, से.-६, हिरणमगरी, उदयपुर

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

गतांक से आगे .....

यही नहीं है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी केवल व्याख्यान ही देते हैं, प्रत्युत् प्रातः काल और सायंकाल की दोनों सन्ध्याओं में पाँच-छह घण्टे ईश्वर के ध्यान और उपासना में लगाते हैं। उनमें अन्तर्दृष्टि विशेषभाव से देखी जाती है। इन्द्रियनिग्रह, आत्मसंयम, उनके विश्वास के अनुगत हैं और इस विषय में उन्होंने विशेष यत्न किया है। इन्हें देखने से वीरत्व, महत्त्व, गाम्भीर्य, उच्चाशा के लक्षण सुस्पष्टतया लक्षित होते हैं। वे अपना जीवन प्रतिदिन उपासना, अध्ययन, व्यायाम और धर्मालाप में बिताते हैं। वे जो कुछ कहते हैं, उसमें से बहुत-कुछ उनके जीवन की कथा है। केवल वेद की निर्भ्रान्तता, पुनर्जन्म प्रभृति हिन्दू धर्मानुगत कोई-कोई संस्कार अभी तक उनके हृदय में वर्तमान हैं। उनका धर्म प्रेम और भक्ति का मार्ग नहीं है। जैसे धर्म के प्रथम सोपान पर पहुँच गए हैं, यदि ऐसे ही अन्य सोपानों पर पहुँच जाएँगे तो उनका मत विशेषरूप से प्रचरित हो जाएगा। हम आशा करते हैं कि उनके द्वारा हिन्दू-समाज पुनर्जीवित हो जाएगा। ईश्वर उनकी साधु इच्छा को पूर्ण करे।'

हमने 'धर्मतत्त्व' से यह लम्बा उद्धरण केवल इस लिए दिया है कि कलकत्ते में शिक्षित और प्रतिष्ठित पुरुषों के क्या भाव थे और उन्होंने स्वामीजी की शिक्षा को किस दृष्टि से देखा और स्वामीजी के संसर्ग का उनपर क्या प्रभाव पड़ा था। दूसरा कारण यह भी है कि अन्य कहीं हमें यह विवरण नहीं मिलता कि स्वामीजी ने अपने व्याख्यानों में क्या कहा था। यह उद्धरण एक प्रकार से उनके भाषणों की संक्षिप्त रिपोर्ट है। पाठक देखेंगे कि उस समय भी स्वामीजी के मन्तव्य वही थे जो पीछे स्वामीजीकृत ग्रन्थों द्वारा प्रचरित हुए। इस उद्धरण का लेखक एक ब्राह्म-समाजी है, जिसे वेद की निर्भ्रान्तता और पुनर्जन्म का सिद्धान्त मनोनीत नहीं हैं और इसी कारण उसने लेख के अन्त में इन सिद्धान्तों पर दबे शब्दों में आक्षेप किया है। आक्षेप क्या एक प्रकार उनकी हँसी उड़ाई है और स्वामीजी के प्रति भी कुछ ऐसा भाव प्रकट किया है कि आश्चर्य है कि स्वामीजी जैसे विद्वान्, बुद्धिमान्, विचारशील और उन्नीसवीं शताब्दी के विचार रखनेवाले भी ऐसे लचर सिद्धान्तों को मानते हैं। ये दोनों सिद्धान्त युक्ति-संगत हैं और प्रबल प्रमाणों पर इनका आधार है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त तो अब इतना व्यापक हो गया है कि पश्चिम के बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी उसे मानने लग गये हैं। वेदों की निर्भ्रान्तता अवश्य अभी तक इतनी ग्राह्य नहीं हुई है जितना पुनर्जन्म का सिद्धान्त, परन्तु यह इसी कारण से है कि अभी तक पश्चिम में वेद के सत्य अर्थों और उनकी शिक्षा का प्रचार नहीं हुआ है, परन्तु यह हो रहा है कि वेदों के विषय में पाश्चात्य विद्वानों के पूर्व विचार परिवर्तित हो रहे हैं और अब उन्हें 'गडरियों के गीत' नहीं समझा जाता, उन्हें पूर्वापेक्षा अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यद्यपि यह तो नहीं कहा जा सकता कि पाश्चात्य विद्वान् वेदों को ईश्वरीय वाक्य मानने की ओर आ रहे है, परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि पहले की अपेक्षा वेदों में उनकी श्रद्धा बढ़ गई है और वे अब वेदों के उतने ऊटपटांग अर्थ नहीं करते, जितने पहले करते थे। पाश्चात्य विद्वानों के अनुयायी भारतीय विद्वानों के विचारों में भी परिवर्तन हो रहा है और वे वेदों के वैज्ञानिक अर्थ करने लगे हैं। यह परिवर्तन शुभ है और भविष्य के लिए आशाजनक हैं। हमें यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि इन परिवर्तनों का कारण स्वामीजी का वेदभाष्य है और उनकी अर्थ करने की शैली ही है।

दूसरी पत्रिका की सम्मति- कई अन्य सुपठित और सम्मानास्पद बंगीय सज्जनों ने भी स्वामीजी के विषय में अपनी सम्मति प्रकट की थी और उनकी विद्या, तप, चरित्र और सुधार कार्य की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी। हम उनकी सम्मतियों को यहाँ ग्रन्थ का कलेवर बढ़ने के भय से उद्धृत नहीं करते। केवल एक उद्धरण 'तत्त्व-बोधिनी' पत्रिका का

और देते हैं। स्वामीजी की कलकत्ता यात्रा के विषय में उसमें इस प्रकार लिखा था-

'थोड़े दिन हुए पण्डित- वर श्रीयुत् दयानन्द सरस्वती अपने विद्या-प्रभाव से कलकत्ता निवासियों को आश्चर्यित कर गये हैं। बंगदेश के ब्राह्मण पण्डितों में बहुत से केवल शास्त्रवचन को लेकर वाणिज्य-व्यवसाय करने में निपुण हैं, परन्तु जब शास्त्र के प्रकृत मर्म, भाव वा तात्पर्य की व्याख्या करनी होती है तो वे चारों ओर अन्धकार ही देखते हैं। बंगदेश के पण्डित मूलशास्त्र को सर्वथा भूल गये हैं और केवल देशाचार और लोकाचार को ही सर्वस्व जानते हैं।'

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

साभार- देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित 'महर्षि दयानन्द चरित'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक उपदेशक, प्रचारक तथा भजनोपदेशक आमन्त्रित हैं

वैदिक विचार धारा के विस्तार और प्रचार हेतु एक व्यवस्थित प्रचार-योजना बनाई जा रही है जिसके अन्तर्गत आर्यसमाज और वैदिक विचारधारा के प्रति समर्पित, व्यवहार कुशल और चरित्रवान व्यक्तियों के द्वारा पूरे देश में व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करवाया जायेगा। इस हेतु निर्धारित चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत चयन किये गये उपदेशकों, प्रचारकों तथा भजनोपदेशकों को यह जानकारी प्रदान की जायेगी कि एक निर्धारित योजना के अन्तर्गत प्रचार-प्रसार का कार्य किन-किन मुख्य विषयों को आधार बनाकर एक रूपता के साथ सभी स्थानों पर किया जाये। प्रचार के दौरान वितरित की जाने वाली प्रचार सामग्री तथा साहित्य की भी जानकारी दी जायेगी।

इस हेतु प्रारम्भिक रूप में १० प्रचारकों का चयन किया जायेगा जो भारत के हिन्दी भाषी राज्यों तथा गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में प्रचार करेंगे। चयनित महानुभावों को कम से कम तीन वर्ष संगठन के साथ कार्य करना होगा। सभी प्रचारकों को सम्मानजनक मानदेय और आवश्यक प्राथमिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जायेंगी।

स्वाध्यायशील, कुशल-वक्ता, व्यवहार-कुशल तथा मिशनरी भावना वाले जिज्ञासु सादर आमन्त्रित हैं। गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त शास्त्री एवं आचार्य तथा प्रचार-प्रसार के कार्य में अनुभवी आवेदकों को प्राथमिकता दी जायेगी। कृपया शीघ्र ही फोटो सहित अपनी शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव आदि का पूर्ण विवरण निम्न पते पर भेजें अन्यथा मेल करें।

आवेदन भेजने का पता- श्री प्रकाशजी आर्य, आर्यसमाज मन्दिर, २७६५, पं. राजगुरु शर्मा मार्ग (इन्दौर रोड़), महू- ४५३४४१ (म.प्र.) मो. ९८२६६५५११७, Email ID : prakasharyamhow@gmail.com

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

समाचार

तीन दिवसीय बालिकाओं का स्व-रक्षा के लिए लाठी प्रशिक्षण

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर-४ के तत्वावधान में बालिकाओं एवं महिलाओं के लिए तीन दिवसीय स्व-रक्षा (Self Defence) प्रशिक्षण शिविर दिनांक २६/६/२०२५ से आरम्भ हुआ। समापन सत्र में शिविर संयोजिका चन्द्रकान्ता वैदिका ने बताया कि प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन २० से २५ की संख्या में उपस्थिति रही।

आर्य वीर दल के प्रान्तीय प्रचारक दिनेश आर्य ने व्यायाम, लाठी के प्रयोग से स्वयं की रक्षा, तलवार संचालन का कुशल अभ्यास कराया

जिससे सभी का आत्मविश्वास प्रबल हुआ।

समापन सत्र के आयोजन में स्थानीय पार्षद् श्रीमान् लोकेश गौड़, आर्य समाज के प्रधान भँवरलाल आर्य, पुरोहित इन्द्र प्रकाश वैदिक, समाजसेवी निरंजन नेभनानी, हरा-भरा उदयपुर के मनोज राजपुरोहित ने बालिकाओं का उत्साहवर्धन किया। श्रीमती राजश्री गाँधी, पीयूष राठौड़, चन्द्रकला आर्या, बेला सिसोदिया की सक्रिय भागीदारी रही।

अपने उद्बोधन में आर्य समाज के पुरोहित इन्द्र प्रकाश वैदिक ने शास्त्र के ज्ञान की तरह शस्त्र संचालन के अभ्यास को अनिवार्य बताया जिससे बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक बल बढ़े और जीवन की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना कर सकें।

श्रीमती राजश्री गाँधी ने बालिकाओं के संस्कारों के महत्व पर उद्बोधन देते हुए आयोजन की सार्थकता के साथ संयोजिका चन्द्रकान्ता वैदिका के पुरुषार्थ का अभिनन्दन किया।

संयोजिका चन्द्रकान्ता वैदिका ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन कर लाठी प्रशिक्षण शिविर की निरन्तरता का निवेदन किया।

विशेष आभार शिशु भारती विद्यालय के श्रीमान् जयव्रत जी श्रीमाली का जिन्होंने विद्यालय परिसर में अभ्यास कराने के लिए सहर्ष सुविधा उपलब्ध करायी।

- चन्द्र कान्ता वैदिका; शिविर संयोजिका

वैद्य श्री पूर्णचन्द्र जी जोशी का निधन

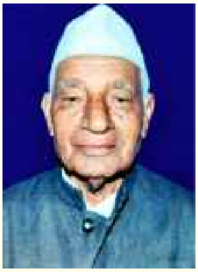

आर्य समाज एवं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के प्रति समर्पित वैद्य श्री पूर्णचन्द्र जी जोशी का दिनांक २१ जून २०२५ को देहावसान हो गया है। श्री पूर्णचन्द्र जी जोशी ने न्यास को अपनी सेवाएँ दीं। उनके निधन से श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ही नहीं वरन् सम्पूर्ण आर्य जगत् की गहरी क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आर्य समाज के उन्नयन हेतु अहर्निश समर्पित श्री पूनमचन्द जी नागर का निधन

आर्य समाज के उन्नयन हेतु अहर्निश समर्पित, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय; आबूपर्वत (राजस्थान) के माननीय ट्रस्टी,भारत के समस्त गुरुकुलों के सहायक, ऋषिभक्त, उदारमना श्री पूनमचन्द जी फूलचन्द जी नागर का दिनांक २७ जून २०२५ को देहावसान हो गया है। उनके निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत् की गहरी क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

श्री धीरज अरोड़ा को पितृ-शोक

न्यास के सहयोगी एवं उदयपुर के आर्य समाजों के प्रत्येक कार्यक्रमों में

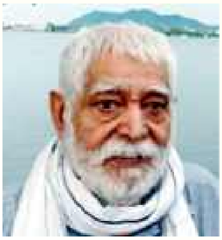

तन-मन-धन से सहयोग करने वाले श्री धीरज अरोड़ा के पिताजी श्रीमान् राजेन्द्र जी अरोड़ा का दिनांक २० जुलाई २०२५ को देहावसान हो गया। पिता का बिछुड़ जाना निश्चित रूप से दुखदायी होता है लेकिन ये भी सच है कि ईश्वर की अपनी एक न्याय व्यवस्था है एक नियम है। उस नियम के अन्तर्गत जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है, हम सभी को उस नियम के आगे नतमस्तक होना ही पड़ता है।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार तथा उदयपुर के सभी आर्यजनों की ओर से परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं परिवारीजनों को इस वेदना को सहन करने तथा उनके द्वारा बताये सन्मार्ग पर चलने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

महाशय राजीव गुलाटी जी डायरेक्टर एमडीएच की ओर से आज महाशय धर्मपाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा हिमाचल मंडी जहां बादल फटने से २०० मकान और मार्केट खत्म हो गए, उनकी सहायता हेतु राहत सामग्री भेजी गई।

दो ट्रकों द्वारा सामान जिसमें १००० राशन के पैकेट, २०० कम्बल, २०० तिरपाल, २०० लेडीज स्वेटर, २०० बच्चों के स्वेटर, १७५ गैस चूल्हे, २०० सोलर लाइट, २०० सेट बर्तनों के भेजे गए।

इस अतुलित उदारता को नमन। महाशय राजीव जी गुलाटी को साधुवाद।

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती आर्य समाज के भामाशाह- प्रमोद सामर

न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी की पुण्य स्मृति में माता लीलावन्ती वैदिक सभागार में आयोजित 'एक शाम राष्ट्र के नाम' काव्य सन्ध्या के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उदयपुर के समाजसेवी तथा भाजपा के सहकारी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक श्री प्रमोद सामर थे तो विशिष्ट अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष श्री गजपाल सिंह राठौड़ थे। आर्यसमाज आबू रोड़ के प्रधान एवं न्यास के उपाध्यक्ष श्री मोती लाल आर्य ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

पूरे देश में अपने काव्यपाठ के लिए विख्यात श्री अजातशत्रु ने अपने ओजस्वी काव्य पाठ से श्रोताओं को लगातार तालियाँ बजाने पर विवश कर दिया। एक बानगी देखिए-

आस्था के सेतु बन्ध टूटने लगे हैं। भ्रष्ट नेताओं का दम्भ तोड़ते चलो।
जामवन्त बनके जगा रहा हूँ हनुमान। रावण की भुजा मरोड़ते चलो।।

तो कवि श्रेणीदान जी ने गायन रूप में कहा-

सत्य के बन सारथी, रथ को बढ़ाकर देखिये,
मिट जायेगी सब दूरियाँ, नजदीक आकर देखिये।
अपने लगेंगे सब तुम्हें, पर्दा हटाकर देखिये,
मिट जायेंगे दुश्मन सभी खुद को मिटाकर देखिये।।

ब्रजराज सिंह जगावत और भावना लुहार ने सुन्दर काव्य पाठ किया।

न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने सभी का स्वागत किया तो अध्यक्ष अशोक आर्य ने स्वामी तत्त्वबोध जी के अतुलित योगदान की चर्चा की।

मुख्य अतिथि प्रमोद सामर ने कहा कि उनका नवलखा महल से जुड़ाव भवन को आर्य समाज को सुपुर्द करने के समय से ही रहा है। जब यह भवन आर्य समाज को प्राप्त हुआ तब भी पूर्ण जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था इस जीर्ण-शीर्ण भवन को भव्य व सुन्दर बनाने हेतु श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्कालीन संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती ने सर्वमेधयज्ञ किया और भवन का पुनरुद्धार करवाया। ऐसे महानुभाव को मैं शत-शत नमन करता हूँ और इस न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य जी एवं उनकी टीम का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि ऐसे महापुरुष की स्मृति को जीवित रखने हेतु उनके द्वारा उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर प्रतिवर्ष यहाँ भव्य आयोजन किया जाता है।

इससे पूर्व कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के रूप में पधारे भारतीय जनता पार्टी के शहर जिलाध्यक्ष श्री गजपाल सिंह राठौड़ ने कहा कि नवलखा महल को आज विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं उनकी टीम ने अथक प्रयास किए, इसका शुभारम्भ न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती ने अपने दान की आहुति दी से किया और उनका प्रयास आज मूर्तरूप में परिवर्तित हुआ है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य समाज, आबू रोड़ के प्रधान एवं न्यास उपाध्यक्ष श्री मोतीलाल आर्य ने कहा कि नवलखा महल से मेरा जुड़ाव

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती के समय से ही रहा है। स्वामी जी का अनुभव व ज्ञान हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

इस अवसर पर राजसमन्द के पूर्व विधायक श्री बंशीलाल खटीक ने स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती को नमन किया।

इस अवसर पर न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया, डॉ. एस.के.माहेश्वरी, जनसम्पर्क सचिव विनोद राठौड़ उपस्थित थे।

कार्यक्रम से पूर्व नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा ईकाई के पदाधिकारी दिवंगत श्री सुकृत मेहरा द्वारा न्यास के लिए किए गए कार्यों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य, संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया, न्यास के कार्यालय मंत्री श्री भंवर लाल गर्ग, न्यासी डॉ. एस.के. माहेश्वरी, पुरोहित नवनीत आर्य, लेखाकार श्री दिव्येश सुथार, जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़, माँ शारदा आर्य समिति की श्रीमती सरला गुप्ता, आर्यसमाज सेक्टर-४ (महिला प्रकोष्ठ) की श्रीमती चन्द्रकान्ता वैदिका, श्री रमेश पालीवाल, श्रीमती ऋचा पीयूष, श्रीमती दुर्गा गोरमात, गाइड श्री सिद्धम, श्री देवीलाल, श्री कालू, श्रीमती निरमा तथा नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के यूथ क्लब के श्री जयेश आर्य, श्री भास्कर मित्तल, श्री शोभित मित्तल, श्री रवीन्द्र राठौड़, सुश्री सृष्टि राठौड़, श्रीमती दुष्यन्ता राठौड़, श्रीमती शीतल गुप्ता, श्री गौरव, श्री आदर्श, पूर्व पार्षद् श्रीमती मनोरमा गुप्ता, श्रीमती आभा आर्या, सुश्री करिश्मा शर्मा एवं कई कार्यकर्त्ता एवं उदयपुर शहर के गणमान्य जन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज हिरणमगरी के प्रचार मंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ जिसके पुरोहित श्री इन्द्रप्रकाश यादव थे। धन्यवाद न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल ने किया।

समारोह का समापन न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य के शान्तिपाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

- भंवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री; नवलखा महल, उदयपुर

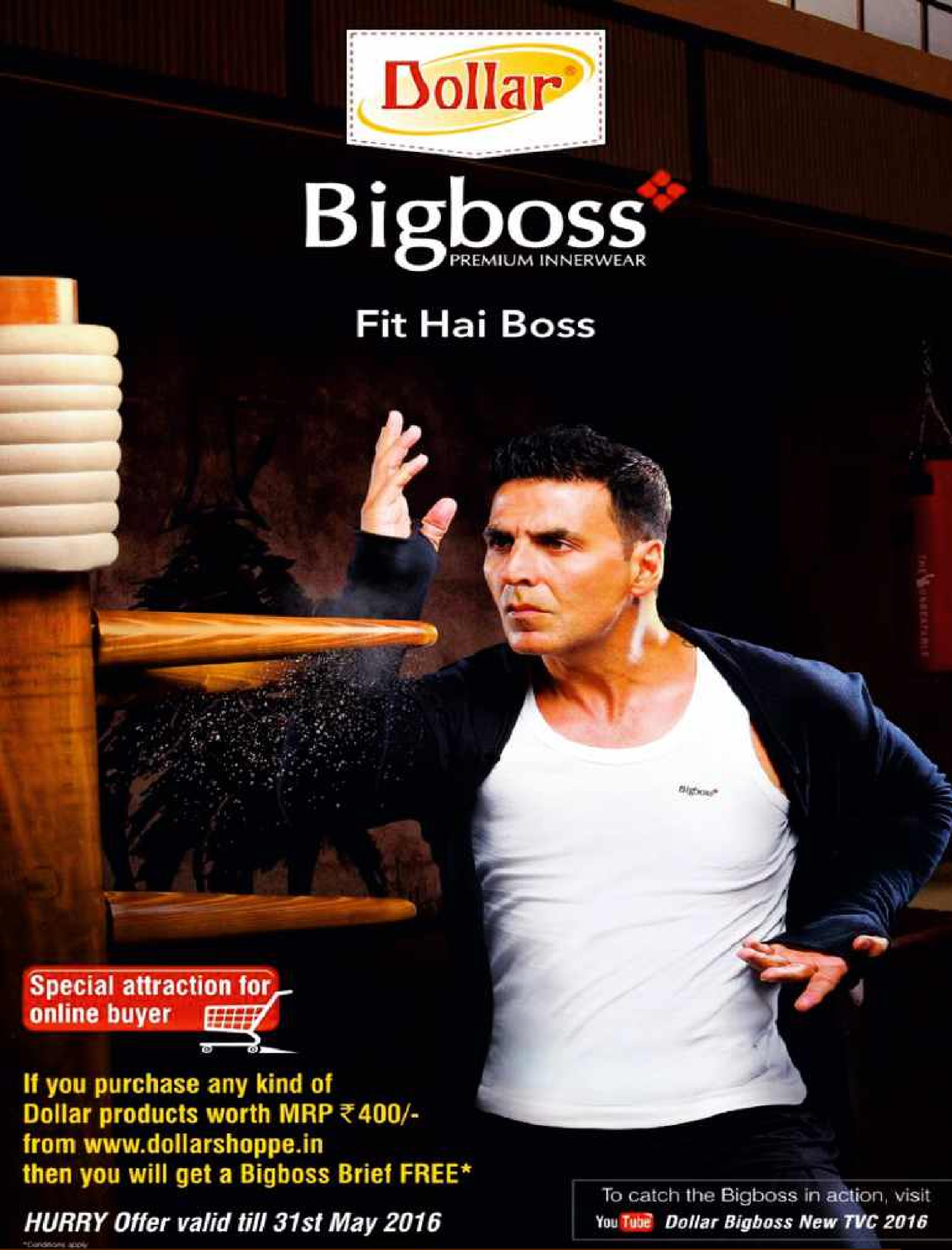
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Special attraction for online buyer
If you purchase any kind of
Dollar products worth MRP ₹400/-
from www.dollarshoppe.in
then you will get a Bigboss Brief FREE*
HURRY Offer valid till 31st May 2016
To catch the Bigboss in action, visit
YouTube Dollar Bigboss New TVC 2016

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2025 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

ये पृथिव्यादि भूत जड़ हैं, उनसे चेतन की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती। जैसे अब माता-पिता के संयोग से देह की उत्पत्ति होती है, वैसे ही आदि सृष्टि में मनुष्यादि शरीरों की आकृति परमेश्वर कर्त्ता बिना कभी नहीं हो सकती।

- सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास पृष्ठ ३१८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर